फरवरी 2002
Rs. 10/-
चन्दामामा

Atul chooses the best!

For greater cleanliness and hygiene, turn to MYSORE SANDAL BABY SOAP.

E
ELEPHANT

H
HEN

M
MISSILE
MISS INDIA Jr

N
NEST

O
ORANGE

P
PIRANHA

V W

The largest range of kids bikes
HERO CYCLES
THE ABC OF CYCLING

विशेष आकर्षण

सम्पुट - १०६ फरवरी - २००२ सञ्चिका - २

गालियों की भूतनी

१९

भारत की गाथा

४७

माया सरोवर

११

भविष्य वाणी

५१

अन्तरङ्गम्

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20
Remittances in favour of
Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अकं ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

२१वीं शताब्दी के लिए संकेत शब्द

हमलोग प्रायः भिन्न-भिन्न रूपों में वाइरस (विष की गाँठ) की उपस्थिति के बारे में सुनते हैं, जो वातावरण को दूषित करते हैं और मानव शरीर के व्यापार को प्रभावित करते हैं। ये वाइरस प्रकृति से उत्पन्न होते हैं और वायु, जल तथा मिट्टी में सक्रिय रहते हैं तथा पौधों और पशुओं द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचते हैं। फिर भी, ऐसे वाइरसों को वैज्ञानिक तथा शिल्पवैज्ञानिक साधनों से नियंत्रित, उपचारित और निवारित किया जा सकता है।

इसके विपरीत कुछ ऐसे वाइरस हैं जो मनुष्यों के मन में उत्पन्न होते हैं और वे विचारधारा की नामावलि के अन्तर्गत आते हैं। परिभाषा के अनुसार विचारधारा एक ऐसी धारणा या धारणाओं का गुच्छ है, खासकर राजनीतिक धारणाएँ जिनको जनता, दल या देश अपनी कर्मधारा का आधार मानता है। यद्यपि यह कुछ उपलब्ध करने की प्रेरणा का परिणाम है, फिर भी प्रायः यह मानव जाति के लिए हितकर नहीं होता और उसके लिए कोई सुधार या लाभ अर्जित नहीं करता।

दृष्टान्त के लिए आतंकवाद को ले लें। यह आरम्भ तो होता है, एक उद्देश्य के निमित्त परन्तु खत्म होता है हिंसा में। इसे विचारधारा नहीं कह सकते। विश्व के अनेक भाग अभी आतंकवाद और आतंकवादी गतिविधियों के शिकार हैं, जिनसे राज्यव्यवस्था का भौतिक कार्यसंचालन प्रभावित हो रहा है। ये केवल रोगग्रस्त मन की अभिव्यक्तियाँ हैं जो खतरनाक खेल में आनन्द अनुभव करता है। इसके बलिपशु सर्वदा और कोई नहीं, बल्कि निर्दोष जनता होती है।

यद्यपि हम लोग २१वीं शताब्दी में रहते हैं, फिर भी युगों पुरानी सूक्ति ''जैसे को तैसा'' अथवा ''ईंट के बदले पत्थर'' आज भी लागू होती है। हम मानवीय संबंधों के दृढ़ आधार के रूप में प्रेम और करुणा के बारे में बोलते और लिखते हैं। यह समय है जब हमें इसको मानव अस्तित्व के संकेत-शब्द के रूप में देखना और समझना चाहिए।

सम्पादक : *विश्वम*
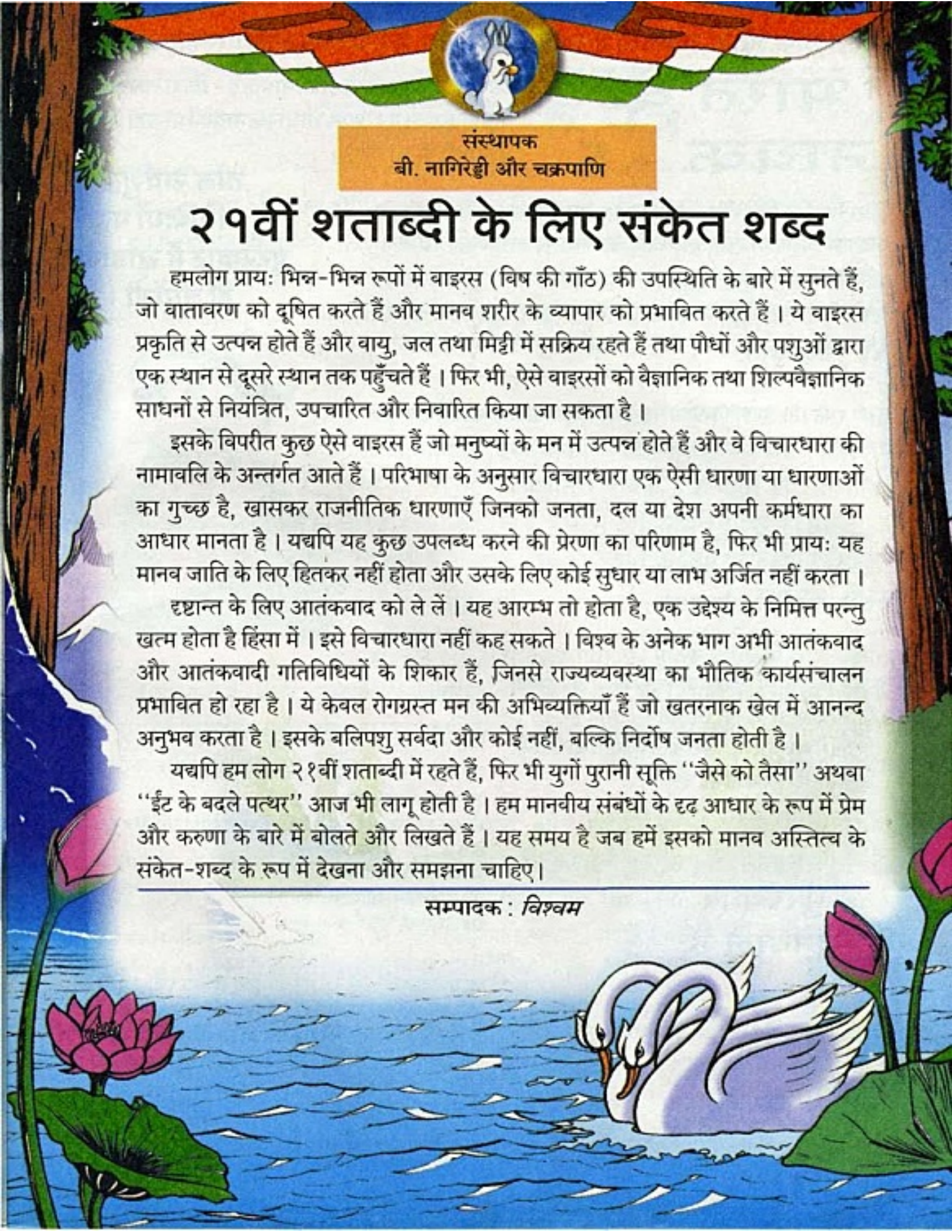
'हीरोज़ ऑफ इंडिया' प्रश्नोत्तरी में अपनी प्रविष्टि भेजें और आश्चर्यजनक पुरस्कार जीतें।

भारत के नायक - 5

आधुनिक भारत के भी अपने नायक हैं - क्रिया-कलाप के अनेक क्षेत्रों में। अपने आधुनिक नायकों पर यहाँ एक प्रश्नोत्तरी दी जा रही है।

तीन सर्वशुद्ध प्रविष्टियों पर पुरस्कार में साइकिलें दी जायेंगी।

1. उसने आज़ाद हिन्द फौज (भारतीय राष्ट्रीय सेना) का संगठन किया। उसके नाम का अनुमान करने के लिए किसी और संकेत की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। ---

2. उसे लोग 'समुद्र का विजेता' कहते हैं। तमिलनाडुवासी इस व्यक्ति ने अपनी पोत परिवहन कम्पनी चलाने के लिए अंग्रेज़ों को चुनौती दी। कौन है वह?
----

3. इस स्वतंत्रता सेनानी ने अपने बचपन में एक बाघ मारने के कारण उपाधि उपलब्ध की। क्या उसका नाम मालूम है?
----

4. उसने और उसके दोस्तों ने स्वतंत्रता संग्राम के हेतु आयुध खरीदने के लिए बाज नगर में एक ट्रेन रोककर खजाना लूट लिया। कौन था वह?
----

5. उसने नाना साहेब की सेना का नेतृत्व किया और अंग्रेज़ों के अधिकार से कानपुर छीन लिया। उसने १८५७ के विद्रोह में ग्वालियर पर कब्जा करने में झाँसी की रानी की सहायता की। क्या नाम है उसका?

प्रत्येक प्रश्न के नीचे दिये गये स्थान को स्पष्ट अक्षरों में भरें। इन पाँचों में से आपका प्रिय आदर्श नायक कौन है? और क्यों? दस शब्दों में पूरा करें

मेरा प्रिय आधुनिक नायक .... है,

क्योंकि ....

प्रतियोगी का नाम: ....

उम्र: .... कक्षा: ....

पूरा पता: ....

....

पिन: .... फोन: ....

प्रतियोगी के हस्ताक्षर: ....

अभिभावक के हस्ताक्षर: ....

इस पृष्ठ को काटकर निम्नलिखित पते पर ५ मार्च से पूर्व भेज दें-

हीरोज़ ऑफ इंडिया प्रश्नोत्तरी-५
चन्दामामा इन्डिया लि.
नं.८२, डिफेंस ऑफिसर्स कॉलोनी
ईक्काडुथांगल, चेन्नई-६०० ०९७.

निर्देश :-

१. यह प्रतियोगिता ८ से १४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए है।
२. सभी भाषाओं के संस्करणों से इस प्रतियोगिता के लिए तीन विजेता चुने जायेंगे। विजेताओं को समुचित आकार की साइकिल दी जायेगी। यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टियाँ अधिक हुई तो विजेता का चुनाव 'मेरा प्रिय नायक' के सर्वश्रेष्ठ विवरण पर किया जायेगा।
३. निर्णायकों का निर्णय अंतिम होगा।
४. इस संबंध में कोई पत्राचार नहीं किया जायेगा।
५. विजेताओं को डाक द्वारा सूचित किया जायेगा।

पाठकों के पत्र

⁂ कहानियाँ और चित्र दोनों मनमोहक हैं । इन्हें छोटे ही नहीं, बड़े भी चाव से पढ़ते और देखते हैं । इन चित्रों का सिलसिला अवश्य जारी रखियेगा । इससे कहानी के पात्रों के हाव-भाव भी मालूम होते हैं । ये रंगीन चित्र बड़े ही चित्ताकर्षक हैं । चन्दमामा की तरह यह 'चन्दमामा' भी चाँदनी बिखेरे । मेरी आशा तथा आकांक्षा है कि 'चन्दमामा' पत्रिका सदा मानव-जाति का पथ-प्रदर्शक बनी रहे ।

- उमामहेश्वर, इंदौर

⁂ चन्दमाम पुनरारम्भ के बाद और रोचक लग रही है । 'भारत की गाथा', 'देवी भागवत' जैसे नये शीर्षक भारत की परंपरा को जानने में अत्यंत सहायक हैं । भारत की संस्कृति व इतिहास के ज्ञान से बच्चों में देश के प्रति आदर की भावना और बढ़ती है । अपने देश को जानने के लिए ऐसी रचनाएँ बहुत ही सहायक सिद्ध होंगी ।

- रमा पंत, अजमेर

⁂ लंबे अर्से से मैं 'चन्दमामा' का पाठक हूँ । इसमें छपी कहानियाँ मुझे बहुत भाती हैं । पहले धारावाहिक कहानियाँ काफ़ी मज़ेदार होती थीं । अगले अंक की बड़ी बेचैनी से मैं इंतज़ार करता था । पर आजकल ये कुछ फीकी लग रही हैं । आप अवश्य इसपर ध्यान दीजिए और रोचक बनाने की कोशिश कीजिए ।

- किशोर, भिवानी

⁂ 'चन्दमामा' कहानियों की प्रधानता कम हो गयी है । ये कम कर दी गयी हैं और इनकी जगह पर जि.के. के विषय छप रहे हैं । आजकल बाज़ार में जि.के.वाली पुस्तकें पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं । उन्हें पढ़कर तत्संबंधी विषय वे जान सकते हैं । कृपया याद रखिये कि 'चन्दमामा' को केवल बच्चे ही नहीं, बल्कि बड़े भी पढ़ते हैं । इस दृष्टि से इसका अपना विशिष्ट स्थान है । मैं आशा करता हूँ कि आप उस स्थान को सुरक्षित रखेंगे ।

- वामदेव, सतारा

⁂ 'चन्दमामा' मेरी प्रिय पत्रिका है । भारत की संस्कृति, परंपरा व इतिहास को लेकर आप जो विषय छाप रहे हैं, वे अवश्य ही ज्ञानवर्धक हैं । किन्तु कि कहानियाँ कम छप रही हैं । धारावाहिक भी उतने दिलचस्प नहीं हैं ।

- रोहिणी महेश, शाहपुर

मुझे क्या मिलेगा?

रमाचंद एक व्यापारी था । वह बहुत ही कंजूस था, साथ ही अव्वल दर्जे का लोभी भी । स्वार्थ का वह जीता-जागता उदाहरण था । बिना किसी लाभ के कोई भी काम या किसी का भी काम करता नहीं था ।

चमन उसी के घर में किराये पर रहता था । छोटे-मोटे काम करके वह थोड़ा-बहुत कमा लेता था । हाल ही में वह दूसरे गाँव से आकर उसके यहाँ रहने लगा था ।

एक दिन रमाचंद अपनी दुकान से लौट रहा था तो उसने देखा कि चमन की बेटी कल्याणी उसके घर से बाहर आ रही है ।

उसने कल्याणी से पूछा, ''क्या काम था बिटिया?''

''नारियल तोड़ने के लिए आपके घर से हँसिया की ज़रूरत पड़ी । वही ले गयी थी और अब लौटाने आयी हूँ ।'' कल्याणी ने कहा ।

रमाचंद ने मीठे स्वर में कहा, ''तुमने यह ठीक नहीं किया बिटिया । हँसिया तो लौटा दी, लेकिन उसे इस्तेमाल में लाने के एवज़ में मुझे एक नारियल देती तो अच्छा होता ।''

कल्याणी तुरंत अपने घर में जाकर एक नारियल ले आयी और रमाचंद को दे दिया ।

तीसरे दिन दोपहर को भोजन करने आये रमाचंद ने अपने घर में कल्याणी को देखा । पूछा, ''किस काम पर आयी हो कल्याणी?''

''आज त्योहार का दिन है न? पकवान बनाने के लिए माँ को कड़ाही की ज़रूरत पड़ी । आपके घर से वह ले गयी थी । रसोई का काम पूरा हो गया । उसी को लौटाने आयी थी ।'' कल्याणी ने हँसते हुए कहा ।

''कड़ाही तो लौटा दी पर उसे इस्तेमाल में

- ईश्वर -

लाने के एवज़ में मेरे लिए क्या लायी हो?'' रमाचंद ने पूछा ।

कल्याणी को लगा कि उससे ग़लती हो गयी । वह तुरंत अपने घर के अंदर गयी और एक थाली में दो-तीन प्रकार के पकवान ले आयी । रमाचंद ने खुश होते हुए वह थाली ले ली ।

बहुत ही खुश होते हुए कल्याणी की पीठ थपथपाते हुए उसने कहा, ''देखो बेटी, आगे से कोई चीज़ मेरे घर से ले जाती हो तो उसे इस्तेमाल में लाने के एवज़ में मेरे पूछे बिना ही कुछ न कुछ देती जाना । इससे मुझे बड़ी खुशी होगी ।''

कल्याणी मुस्कुराती हुई वहाँ से चली गयी ।

एक हफ़्ते के बाद जब रमाचंद दूसरे गाँव से लौट रहा था तब उसने अपने घर से आती हुई कल्याणी को देखा ।

''कल्याणी, क्या कुछ लौटाने आयी थी?'' हँसते हुए उसने पूछा ।

''हाँ चाचाजी, सिर्फ़ लौटाया ही नहीं, आपके कहे मुताबिक बाक़ी काम भी पूरा कर दिया ।'' कल्याणी ने कहा ।

''क्या ले गयी थी बिटिया?'' रमाचंद ने पूछा । ''चूहादान ले गयी थी । हमारे घर में चूहे बहुत ही ज़्यादा हैं । बहुत तंग करते हैं हमें । कुछ चूहे चूहादान में फँस भी गये । ले जाने के एवज़ में आपको कुछ न कुछ देना भी तो चाहिए । इसी लिए चूहादान में फँसे दो चूहे ले आयी और आपके घर में छोड़ दिया । चूहादान आपके बेटे को सौंप दिया । चाचाजी, आपकी बात मैं कभी नहीं भूलती ।''

रमाचंद को चक्कर आ गया । एक क्षण तक उसके मुँह से बात भी नहीं निकली । पर इस घटना के बाद धीरे-धीरे रमाचंद में परिवर्तन आने लगा । तब से उसने ''मुझे क्या मिलेगा'' की विचार-पद्धति त्याग दी । अब वह अच्छा आदमी कहलाने लगा ।

आपके लिए प्रश्नोत्तरी

कोरापुट

प्रकृति प्रेमियों को कोरापुट भायेगा। उड़ीसा के इस मण्डल में प्राकृतिक सुषमा का प्राचुर्य है। यह समुद्र तल से २९९० फुट की ऊँचाई पर स्थित है और प्रसिद्ध दण्डकारण्य के जंगलों के निकट बसा हुआ है।

जयपुर, जो कोरापुट जिला का व्यापारिक केन्द्र है, वन्य जीवन से संपन्न जंगलों और जलप्रपातों से भरा पड़ा है। निकटस्थ पर्यटन स्थलों के भ्रमणार्थ योजना बनाने के लिए यह एक आदर्श आधार है।

यहाँ से ७० किलोमीटर दूर मच्छकुण्ड नदी पर बसा रमणीक दुदुमा जलप्रपात है।

पर्यटकों का एक और आकर्षक सुरम्य स्थल गुप्तेश्वर है, जहाँ भगवान शिव गुप्तेश्वर का एक गुफा-मंदिर है। यह जयपुर से ५८ कि.मी. दूर है।

एक और मंडलीय नगर रायगढ़ भी जो बरहमपुर से कोरापुट जाने के मार्ग में पड़ता है, प्राकृतिक सुषमा के लिए प्रसिद्ध है।

१३४ कि.मी. दूर, मीनाझोला तीन नदियों के संगम पर बसा हुआ है। प्राकृतिक सुषमा के अतिरिक्त यह पवित्र तीर्थस्थल के लिए भी प्रसिद्ध है। कोरापुट में अनेक जनजातियाँ भी रहती हैं।

आपके लिए प्रश्नोत्तरी !

१४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए।

प्रतियोगिता - VI

१. कोरापुट जिले की हरी-भरी घाटी में वायु इंजिन का एक कारखाना है। क्या तुम बता सकते हो कि यह किस स्थान पर है?

---

२. एशिया का सबसे बड़ा अल्मुनियम उत्पादक 'नाल्को' कोरापुट के निकट है। कहाँ है इसका कारखाना?

---

३. इस मनोहर स्थान पर नागवल्ली नदी के साथ दो जलप्रपात हैं। यहाँ स्थित अनोखे आकार की दो शिलाएँ बहुत प्रसिद्ध हैं। इस स्थान का नाम बताओ।

अपने उत्तर स्पष्ट अक्षरों में रिक्त स्थानों में लिखें, और नीचे लिखे कूपन को भरकर निम्न लिखित पते पर भेज दें :

Orissa Tourism Quiz Contest
Chandamama India Limited
No.82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097

नाम : ....

आयु : ....

पता : ....

....

पिन.................. फोन ....

Winners picked by Orissa Tourism in each contest will be eligible for **3 days, 2-night** stay at any of the **OTDC Panthanivas**, upto a maximum of four members of a family. Only original forms will be entertained. The competition is not open to CIL and Orissa Tourism family members. Orissa Tourism, Paryatan Bhaven, Bhubaneswar-751 014. Ph: (0674) 432177, Fax : (0674) 430887, e-mail : ortour@sancharnet.in. Website : Orissa-tourism.com

बहुत पहले की बात है। अमरावती नगर राज्य के आस्थान में कुलशेखर नामक एक राजकर्मचारी था। जयशील उसका एकलौता बेटा था। बचपन में ही उसकी माँ मर गयी थी, इसलिए कुलशेखर ने अपने बेटे जयशील को बड़े ही लाड़-प्यार से पाला। जयशील अपने यौवन-काल में सभी विद्याओं के साथ-साथ क्षत्रियोचित युद्ध विद्याओं में भी प्रवीण हो गया।

कुलशेखर की चाह भी कि उसका बेटा आस्थान में काम करे और राजा की कृपा-दृष्टिका पात्र बने। वह इसके लिए राजा के पास ले ही जानेवाला था कि इतने में अचानक उसकी मृत्यु हो गयी।

जयशील अब अकेला रह गया। बुरी लतों में डूबे कुछ युवकों के साथ उसकी दोस्ती हो गई। पिता की संपत्ति को देखते-देखते उसने फूंक दिया। वह जूआ भी खेलने लगा और दिन-रात जूए के स्थान पर रहने लगा।

पिता के मरने के चार-पाँच महीनों के अंदर ही उसकी सारी जायदाद छिन गयी। अब उसकी दशा बडी ही दयनीय हो गयी थी। एक बार तीन-चार दिनों तक कुछ खाये बिना ही जुआखाने में पड़ा रहा। बाहर आने से वह शरमाता था, क्योंकि उसकी दाढ़ी बढ़ गयी थी और कपड़े मैले हो गये थे।

देवशर्मा नामक उसके दोस्त ने उसकी दुर्दशा पर सहानुभूति दिखाते हुए कहा, ''जयशील, जो हुआ, सो हो गया। तुमने यह दुर्दशा अपने हाथों ही कर ली। तुम्हें मालूम नहीं होगा कि जूआ आदमी को क्या से क्या बना देता है। इस गर्त में जब कोई गिर जाता है, तब कभी बाहर नहीं आ पाता। तुम शिक्षित हो। अब तो अपने को संभालो। बीते दिनों की याद करके दुख करने से कोई फ़ायदा नहीं।''

यों उसने हितबोध किया ।

जयशील थोड़ी देर तक मौन रहा और सोचता रहा । फिर कहा, ''मित्र देवशर्मा, एक सच्चे मित्र होने के नाते तुमने मुझे सही सलाह दी । आगे क्या करना चाहिए, मुझे शीघ्र ही निर्णय लेना होगा ।''

देवशर्मा कुछ कहने ही वाला था कि इतने में बाहर से शोरगुल सुनायी पड़ा। राजा के अश्वदलनायक कृपाणजित के साथ उसके चार सैनिक द्यूतगृह के अंदर आये और वहाँ उपस्थित लोगों को कोड़े से पीटने लगे ।

जयशील से यह अन्याय सहा नहीं गया । उसने विनयपूर्वक उनसे पूछा, ''ऐसा आप क्यों कर रहे हैं । यह तो अधर्म है, अन्याय है ।''

''जुआरी मुझे न्याय-अन्याय का बोध करा रहा है, हितोपदेश दे रहा है। वाह रे वाह, कैसी विचित्र बात है।'' यह कहते हुए कृपाणजित ने जयशील को भी कोड़े से ज़ोर से मारा ।

जयशील को जैसे ही चोट लगी, वह क्रोधित हो उठा और एक लाठी लेकर उसके सिर पर प्रहार किया । कृपाणजित दर्द के मारे आह भरते हुए म्यान से तलवार निकालने ही वाला था कि इतने में जयशील ने उसकी कमर में ज़ोर से लात दे मारी । कृपाणजित दर्द के मारे चिल्ला उठा और उठकर खड़ा हो गया । उसे यह जानने में देर नहीं लगी कि जयशील के सामने उसकी दाल गलनेवाली नहीं है। इसलिए वह घोड़े पर बैठकर भाग जाने के लिए उद्यत होने लगा । जयशील भी चुप नहीं रहा । वह भी तेज़ी से उसी के घोड़े पर उसके पीछे चढ़ गया । एक हाथ से उसने लगाम पकड़ ली और दूसरे हाथ से कृपाणजित के सिर के बाल पकड़ लिये । फिर अपने घुटनों से वह उसे मारने लगा। घोड़ा अपनी आदत के मुताबिक राजभवन के सामने जाकर खड़ा हो गया ।

उस समय राजा भवन के ऊपर खड़े होकर मंत्री से सलाह-मशविरा कर रहे थे । उन्होंने नौकर को बुलाया और आज्ञा दी, ''उन पियक्कड़ों को यहाँ उपस्थित करो ।''

नौकर कृपाणजित और जयशील को लेकर राजा के सामने आया । राजा ने अपने अश्वनायक को पहचाना और कहा, ''जित, तुम मेरे अश्वदलनायक हो । तुम घोड़े पर बैठकर

क्या करतब प्रदर्शित कर रहे थे?'' ऊँचे स्वर में राजा ने पूछा ।

बिना कुछ छिपाये कृपाणजित ने जो हुआ, राजा को सब कुछ बता दिया । सब कुछ सुनने के बाद राजा ने क्रोध भरे स्वर में कहा, ''जित, अपनी कायरता के कारण तुमने संपूर्ण सेना को बदनाम किया, उन्हें अपमानित किया । मैं तुम्हें देश बहिष्कार का दंड दे रहा हूँ। तलवार वहाँ रख दो और तुरंत देश से निकल जाओ।''

कृपाणजित ने तलवार ज़मीन पर रख दी और सिर झुकाकर वहाँ से चला गया। तब जयशील को तीक्ष्ण दृष्टि से देखते हुए राजा ने कहा, ''अरे जुआखोर, तुम्हें मौत की सज़ा देता हूँ। कुछ कहना है तो कहो।''

जयशील निराशा में डूबा हुआ था। उसके पास कहने के लिए कुछ था भी नहीं। इसलिए उसने बड़े ही दीन स्वर में कहा, ''महाराज, आपने जब मेरी मौत की सज़ा सुना ही दी तब और कहने के लिए क्या बाक़ी रह गया है।''

''क्या तुम्हें अपने प्राण का भय नहीं?'' राजा ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा। ''दारिद्र्य भय के सम्मुख प्राण भय की क्या गिनती महाराज।'' जयशील ने कहा। तब मंत्री ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, ''महाराज, यह युवक दिवंगत कुलशेखर का इकलौता पुत्र है, जो कभी हमारे आस्थान में काम करते थे। आप इस पर दया कीजिए।''

''ठीक है, मौत की सज़ा से इसे मुक्त करता

हूँ। पर इसे देश-बहिष्कार का दंड देता हूँ।'' राजा ने आदेश दिया। राजा को नमस्कार करके जयशील मुड़ने ही वाला था कि राजा ने कहा, ''लो, कृपाणजित की छोड़ी तलवार अपने हाथ में रख लो। एक सप्ताह के अंदर तुम्हें मेरे राज्य की सीमा के पार चले जाना होगा। जान गये?''

जयशील ने नगर छोड़ने में थोड़ी भी देरी नहीं की। अरण्य मार्गों से होता हुआ वह जाने लगा। यों उसने सात दिनों तक यात्रा की और जंगली फलों को खाता हुआ अपना पेट भरने लगा। एक दिन सूर्यास्त की वेला तक एक अन्य देश की राजधानी के निकट पहुँच गया।

जयशील उस रात को एक बरगद के पेड़ के नीचे सो गया। थोड़ी ही देर में वह गाढ़ी निद्रा में चला गया। ठीक आधी रात को सियारों की

था, ''ठहरो, ठहर जाओ। महाकाल के इस सेवक कालकाल को देखकर थर-थर काँपनेवाले तुम महाकाल का ही आवाहन करने पर तुल गये?''

जयशील ने उस कालकाल को रोका और निधड़क कहा, ''तुम जो भी हो, मैं डरनेवाला नहीं हूँ। पर किसी के पीछे पड़कर उसे मारने की कोशिश करते हुए देखना मेरे लिए असहनीय है। मैं तुम्हें ऐसा करते हुए अवश्य रोकूँगा।''

उसकी बातों को सुनते ही कालकाल विकृत रूप से हँस पड़ा और कहने लगा, ''तुम्हारे साहस की दुहाई देता हूँ। पर ज़रा मेरा असली रूप भी देख लो,'' कहते हुए उसने श्वेत वस्त्र निकाल कर फेंक दिये।

चिल्लाहट से वह जाग उठा। थोड़ी सी दूरी पर पेड़ों के बीच में से मंद रोशनी आ रही थी। धुआँ भी उसे दिखायी पड़ा। जयशील चकित होकर उस तरफ़ ग़ौर से देख ही रहा था कि इतने में ''रक्षा करो, रक्षा करो! महाकाल मुझे निगलने जा रहा है'' का आर्तनाद सुनायी पड़ा।

जयशील उठ खड़ा हुआ और तुरंत तलवार निकाल ली। जहाँ से आर्तनाद सुनायी दे रहा था, उस तरफ़ वह दौड़ा-दौड़ा गया। वह श्मशान था। दो-तीन शव जल रहे थे। उसने उन लपटों में एक व्यक्ति को देखा, जिसने काले कपड़े पहन रखे थे। उसके बाल बिखरे हुए थे और वह आर्तनाद करता हुआ भागा जा रहा था। शरीर भर में श्वेत वस्त्र पहना हुआ एक और व्यक्ति उसका पीछा कर रहा था और कहता जा रहा

कालकाल का वह रूप अति भयंकर था। उसके शरीर का रंग एकदम काला था, उसकी आँखों से ज्वाला निकल रही थी। वह मुँह से आग उगल रहा था। उसने भयानक गर्जना की।

जयशील एक पल के लिए निश्चेष्ट रह गया। पर उसने अपने को तुरंत संभाल लिया और अपनी तलवार से कालकाल की छाती को निशाना बनाकर कहा, ''अरे दुष्ट, तुम्हारे विकृत आकार से मैं डरनेवाला नहीं हूँ। भागे जा रहे व्यक्ति को मारना चाहते हो तुम! तुम भी अव्वल दर्जे के कायरों में से हो।''

कालकाल थोड़ा पीछे हटा और कहा, ''युवक, तुम्हारे साहस की दाद देता हूँ। अमानुषिक शक्तियों को महासत्व ही काबू में रख सकते हैं। अब जिसने मेरा आवाहन किया,

वह सिद्धसाधक अल्प सत्व है। ऐसे को मार डालना ही चाहिए।'' कहता हुआ वह आगे जाने का प्रयत्न करने लगा।

जयशील ने अपनी तलवार उसकी छाती के सामने रखी, जिससे वह आगे न बढ़े और मुड़कर सिद्धसाधक को ढूँढ़ने लगा। इतने में कालकाल ने अपनी छाती से तलवार हटा दी।

पर जयशील उसे यों हीं जाने देनेवाला नहीं था। उसने तुरंत कालकाल के कंठ को निशाना बनाकर तलवार फेंकी। इससे उसका सिर धड़ से अलग हो गया। और दूर जा गिरा। दूसरे ही क्षण वह सिर गिरता-उठता हुआ और ठठाकर हँसता हुआ कहने लगा, ''जयशील, निस्संदेह तुम महावीर हो। मेरे रक्त से तुम्हारी तलवार भीग गयी। इसका यह मतलब हुआ कि तुम्हारी तलवार अमोघ शक्तिशाली व महिमामयी है। जाओ, जो भी साधना चाहते हो, निष्कंटक साधो।''

जयशील उसकी बातों पर स्तब्ध रह गया। उसके आश्चर्य की सीमा न रही। कटे सिर के पास वह पहुँचा और उसे इधर-उधर हिलाया। उसे मालूम हो गया कि अब वह निर्जीव है। जो मरा था, वह निःसंकोच बलाढ्य था। उसके कान और नाक में सोने के आभूषण थे। उसके कंठ में कसकर बंधी हुई गुरियों की माला थी। जयशील ने ग़ौर से उन्हें देखा।

उसने तलवार म्यान में रख ली और रक्षा माँगनेवाले काले कपड़े पहने हुए आदमी को ढूँढ़ने लगा। वह आसपास कहीं भी दिखायी नहीं पड़ा। कहाँ चला गया होगा? डर के मारे कहीं इन पेड़ों के नीचे अचेत गिर तो नहीं गया? यों सोचते हुए बरगद के उस वृक्ष के पास गया, जहाँ वह पहले सो चुका था।

बरगद के वृक्ष की टहनियों पर बैठे उल्लू चीख रहे थे। दूर से सियार भी चिल्लाने लगे। इसे लगा कि अब उसके लिए वहाँ सोना संभव नहीं है। इसके अतिरिक्त उसे ज़ोर की प्यास भी लगी थी।

''लगता है, रात का तीसरा पहर भी बीत चुका। आसपास कोई सरोवर हो तो पानी पीकर प्यास बुझा लूँगा। स्नान भी कर लूँगा और तड़के ही नगर में चला जाऊँगा। कपडे फट गये हैं और एकदम मैले भी हो गये हैं। फिर भी कमर में लटकती हुई तलवार को देखकर और इसकी मूठ पर की नक्काशी देखकर लोग समझेंगे कि मैं

किसी कुलीन परिवार का हूँ। अगर कोई पूछे तो मैं कह दूँगा कि जंगल में शेर का मुकाबला किया और उसे मार डाला।'' यों सोचते हुए जयशील वहाँ से निकला। उस भयंकर श्मशान को छोड़कर थोड़ी दूर जाने के बाद उसने एक छोटा-सा घर देखा। उसमें एक दीप भी जल रहा था। वह घरवालों से पानी माँगकर अपनी प्यास बुझाना चाहता था। बाहर से उसने पुकारा। ''महाराज, मैं मुसाफ़िर हूँ। पीने के लिए पानी मिलेगा?''

तुरंत घर का दरवाजा खुला। एक बुढ़िया हाथ में दीप लिये आयी और कहा, ''बेटे, अंधेरा छा जाते ही किसी सराय में सो जाना था। इतनी रात को यात्रा क्यों कर रहे हो? अंदर आ जाओ। पानी पीलो।''

जयशील अंदर गया। बुढ़िया ने दीप की कांति में उसे ग़ौर से देखा और आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, ''मैं तो समझती थी कि तुम तीर्थयात्रा पर निकला कोई वृद्ध हो। यह क्या? इतनी छोटी उम्र में ही तलवार कमर में बाँध ली और इन अरण्य प्रांतों में घूम रहे हो?''

जयशील ने पानी पीने के बाद कहा, ''पानी पिलाकर मेरी जान बचा ली तुमने। लगता है, घर में और कोई नहीं हैं।''

''हाँ बेटा, कोई और नहीं है। मेरी संतान नहीं हुई। मेरे पति की मृत्यु पिछले साल ही हुई। वे राजा के यहाँ काम करते थे। उनके मर जाने के बाद राजा उनके वेतन का तीसरा हिस्सा इस असहाय बुढ़िया के पोषण के लिए दे रहे हैं। उसी के आधार पर अकेली अपने दिन गिन रही हूँ।'' बुढ़िया ने बताया।

''माँ, इस प्रांत में नया-नया आया हूँ। यहाँ के पास के नगर का नाम क्या है? राजा का क्या नाम है?'' जयशील ने पूछा।

बुढ़िया ने ठंडी सांस लेते हुए कहा, ''नगर का नाम हिरण्यपुर है। राजा का नाम है, कनकाक्ष। वह धर्मात्मा है। प्रजा का शुभ चिंतक है। उनका हित करना ही उसका लक्ष्य है। परंतु एक महीना पहले राजकुमारी और युवराज का किसी ने अपहरण कर लिया। उस दिन से राजा बहुत परेशान हैं और वे रोग-ग्रस्त हो गये हैं।''

जयशील सोच में पड़ गया। भला रोगग्रस्त राजा से कैसे नौकरी माँगे? उसने वह विचार

त्याग दिया और राजा की दिक़्क़तों को जानने की उत्कंठा उसमें जगी।

''माँजी। किसी शत्रु राजा ने यह काम किया होगा। उसी ने उनकी बेटी और बेटे का अपहरण किया होगा। मेरा अंदाज़ा सही है न?'' जयशील ने पूछा।

''अगर ऐसा ही होता हो तो फिर परेशानी किस बात की? राजा कनकाक्ष शत्रु को मार डालते और अपनी बेटी, बेटे को घर ले आते। लोगों का अनुमान है कि उनका अपहरण करनेवाला कोई राक्षस या यक्ष होगा।'' बुढ़िया ने कहा।

बुढ़िया तत्संबंधी और विवरण देने ही वाली थी कि इतने में बाहर से कोलाहल सुनायी देने लगा। एक रोता हुआ व्यक्ति कह रहा था, ''महाशय, श्मशान में मेरे पिता के सिर को काट डालनेवाला इसी तरफ़ आया है। देखिये, आधी रात के समय इस ब्राह्मण बुढ़िया के घर में दीप जल रहा है। उससे कृपया पूछिये कि क्या उसने उस हत्यारे को देखा?''

''तुम तो श्मशान के पहरेदार ठहरे। बातें बंद करो। उस महावीर ने जिसका सर कटा, वह कालकाल था, जो अपने को भूतप्रेतों का गुरु होने का दावा करता था। ऐसे सारे विषयों से मैं अच्छी तरह से परिचित हूँ।'' एक और नाराज़ होता हुआ बोल रहा था।

दोनों को डाँटता हुआ तीसरा कह रहा था, ''तुम दोनों चुप हो जाओ। मरा हुआ श्मशान का पहरेदार कैसे फिर से ज़िन्दा हो गया, यह जानने का भार मंत्री ने मुझे सौंपा है। जानते हो, मैं नगर रक्षक हूँ। मुझे रोको मत।''

जयशील ने उनकी बातें सुन लीं। तब उसने बुढ़िया से कहा, ''माँ जी, लगता है कि मुझे पकड़ने के लिए नगर रक्षक और कुछ सैनिक आये हुए हैं। मेरा यहाँ रहना उचित होगा या पीछे के दरवाज़े से चला जाऊँ?''

बुढ़िया उत्तर दे, इसके पहले ही नगर रक्षक दरवाज़ा ज़ोर-ज़ोर से खटखटाने लगा और कहने लगा, ''अंदर जो हैं, वे तुरंत दरवाज़ा खोलें।''

(सशेष)

दलनायक

दुर्गापुर के राजा और एक पड़ोसी शत्रु राजा के बीच में युद्ध छिड़ गया। पहाड़ी मार्ग के बीचों बीच एक बड़ा पत्थर पड़ा हुआ था। इससे आना-जाना संभव नहीं हो पा रहा था। दुर्गापुर के सैनिक उसे वहाँ से हटाने की कोशिश में लगे हुए थे। यद्यपि वे अपना पूरा बल लगा रहे थे, फिर भी सफल नहीं हो पा रहे थे। दूर खड़ा दलनायक उनपर नाराज़ होता हुआ बोला, "इतने लोग हो, पर क्या फ़ायदा? एक पत्थर को रास्ते से हटा नहीं पा रहे हो। जल्दी उसे वहाँ से हटाओ। राजा का रथ किसी भी क्षण इधर से गुज़र सकता है। निकम्मे कहीं के।"

तब घोड़े पर सवार एक आदमी वहाँ आया। क्षण भर के लिए रुककर उसने वह सब देखा, जो वहाँ हो रहा था। फिर उसने दलनायक से कहा, "तुम भी उन दस सैनिकों के साथ मिलकर कोशिश करोगे तो हो सकता है, वह पत्थर वहाँ से हटा दिया जाए। क्या तुमने इसके बारे में सोचा?"

"मैं? मैं तो दलनायक हूँ।" दलनायक ने गर्व-भरे स्वर में कहा।

उसकी यह बात सुनते ही घुड़सवार नीचे उतरा और सैनिकों के पास गया। सैनिकों में उत्साह भरते हुए उसने कहा, "मैं ग्यारहवाँ आ गया हूँ। चलो, पूरा बल लगायें और पत्थर को रास्ते से हटाएँ।"

कुछ ही क्षणों में उन सबने मिलकर पत्थर को रास्ते से हटा दिया। घुड़सवार खुश होता हुआ फिर से घोड़े पर सवार हो गया और दलनायक से कहा, "अगर कभी रास्ते में पड़े बड़े पत्थरों को हटाने की ज़रूरत पड़े तो अपने सेनापति वीरवर्मा को ख़बर भेज देना।" यों कहकर वह घोड़े को तेज रफ्तार में दौड़ाकर चलता बना।

उसकी इन बातों से दलनायक और सैनिकों को मालूम हो गया कि वह घुड़सवार कोई और नहीं, स्वयं दुर्गापुर के सेनापति थे।

- मनजीत सिंग.

गालियों की भूतनी

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः उस पुरा
पेड़ के पास गया और पेड़ पर से शव क
उतारा। उसे अपने कंधे पर डाल लिया औ
यथावत् श्मशान की ओर बढ़ने लगा। त
शव के अंदर से वेताल ने कहा, ''राजन
मेरी समझ में नहीं आता कि आखिर तुम्हा
लक्ष्य है क्या? यह आधी रात का सम
है। सर्वत्र अंधकार छाया हुआ है। भयंक
जंतुओं, विषैले प्राणियों तथा भूत-प्रेतों
भरे इस श्मशान में क्यों खतरा मोल ले र
हो? यह मेरे लिए अब भी निगूढ़ रहस्य ब
हुआ है। साधारणतया देखा गया है कि

व्यक्तिगण अपनी इच्छाओं की पूर्ति के प्रयत्नों में मानसिक तनाव व दबाव के शिकार हो जाते हैं और इतना ऊब जाते हैं कि आखिर वे अपनी इच्छा भी भूल जाते है। अरुणा नामक युवती ने एक महर्षि से बरदान पाया। पर बिना सोचे-विचारे उसने यह बरदान दूसरों की भलाई में लगा दिया। मैं नहीं चाहता कि तुमसे भी ऐसी ग़लती हो जाए, इसलिए तुम्हें जागरुक करने के लिए उसकी कहानी बताने जा रहा हूँ। अपनी थकावट दूर करते हुए उसकी कहानी ध्यान से सुनो।'' फिर वेताल उसकी कहानी यों सुनाने लगा।

गंगा बड़ी ही मुँहफट थी। उसके माता-पिता ने उसकी शादी शांत और कोमल स्वभाव के बीरबल से कर दी। फिर उन्होंने सुख की साँस ली। उस दिन से बीरबल के घर में शांति ओझल हो गयी।

गंगा के ससुराल आने के पहले ही उसकी सास बीमार पड़ गयी। ससुर बूढ़ा था। मन की शांति के अभाव में दोनों जल्दी ही मर गये। तब से गंगा अपने पति को कोसती ही रही। बीरबल शांत स्वभाव का था। वह यह सब कुछ बड़ी ही सहनशक्ति के साथ सहता रहा। थोड़े समय के बाद उनके एक बेटा और एक बेटी हुई। गंगा उन्हें भी डाँटती-फटकारती थी। बड़ी हो जाने के बाद बेटी की शादी हो गयी और वह ससुराल चली गयी।

गंगा और बीरबल के बेटे का नाम था भीम। वह बहुत ही हट्टा-कट्टा था। देखने में शूर-वीर लगता था। वह भी अपने पिता की ही तरह शांत स्वभाव का था। वह दुनिया में किसी से भी डरता नहीं था, डरता था तो सिर्फ़ अपनी माँ से।

एक बार भीम अपनी माँ के लिए रेशमी साड़ी खरीदने गंगापुर गया। यह गाँव रेशमी साड़ियों के लिए प्रसिद्ध था। जाने के पहले उसने भीम को स्पष्ट बता दिया कि उसे किस रंग की साड़ी चाहिए और उस पर कैसे-कैसे बिन्दु हों। भीम उस गाँव के कितने ही जुलाहों के घर गया, पर कहीं भी ऐसी साड़ी उसे नहीं मिली। वह अच्छी तरह से जानता था कि ऐसी ही साड़ी न ले जाने पर क्या बीतेगा, माँ कैसी-कैसी गालियों से उस पर प्रहार करेगी। वह निर्णय कर नहीं पाया। दुखी होकर उस गाँव के सरोवर के किनारे एक पेड़ के नीचे बैठ गया।

उस समय कुछ युवतियाँ खाली घड़े लिये वहाँ आयीं। उन युवतियों में से अरुणा नामक युवती ने पेड़ के नीचे बैठे भीम को देखा और उसे डाँटती हुई बोली, ''अजी, यह भी कोई बैठने की जगह है? जानते नहीं, हम लड़कियाँ यहाँ नहाती हैं। क्या जान-बूझकर यहाँ ताक-झांक के लिए बैठे हो?

भीम उसके कटु स्वर पर दुखी हो गया और वहाँ बैठने का उसने कारण स्पष्ट किया।

विषय जानकर अरुणा ठठाकर हँस पड़ी और बोली, ''वाह, तुम्हारी माँ बड़ी ही चतुर लगती है। साड़ियों के लिए उसे स्वयं आना था या औरतों को भेजना था। एक मर्द को भेजती है, वह भी तुझ जैसे नादान मर्द को। ठीक है, मैं तुम्हारी मदद करूँगी, परंतु पहले यहाँ से उठो। गाँव में जाओ। वहाँ शिवराज के घर के सामने के चबूतरे पर मेरा इंतजार करो।''

थोड़ी देर बाद अरुणा आयी और उससे पूछकर मालूम कर लिया कि गंगा देखने में कैसी है। वह उसे लेकर एक जुलाहे के घर गयी। वहाँ उसने एक साड़ी कम दाम में उसे दिलवायी।

काम पूरा होते ही अरुणा ने भीम से कहा, ''घर पहुँचने के बाद अपनी माँ को यह साड़ी देना। फिर उससे कहना कि जुलाहा कह रहा था कि पाँच साल पहले ठीक ऐसी ही साड़ी एक महारानी ने भी खरीदी थी। तुम्हारी माँ यह सुनकर बेहद खुश होगी क्योंकि उसकी तुलना एक महारानी से हो रही है। तुम निश्चित होकर जाओ।

तुम्हारी माँ को अवश्य ही यह साड़ी बहुत पसंद आयेगी।''

गाँव लौटकर भीम ने अरुणा के कहे अनुसार ही किया। उसकी माँ उसकी बातें सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुई। भीम की लायी साड़ी की उसने बड़ी प्रशंसा की।

भीम ने जो भी हुआ अपने पिता को बताया। उसने यह भी कहा कि अगर अरुणा इस घर की बहू बनकर आयेगी तो माँ के चिडचिडे स्वभाव को अवश्य ही बदल डालेगी।

दूसरे दिन उसने माँ से झूठ कह दिया कि मैं एक जरूरी काम पर पास ही के गाँव में जा रहा हूँ और गंगापुर चला गया। अरुणा ने सरोवर की तरफ़ उसे आते हुए देख लिया। जल्दी-जल्दी वह उसके पास आ गयी और पूछने लगी, ''क्या

तुम्हारी माँ को साडी अच्छी नही लगी? क्या उसने तुम्हें खूब डाँटा-फटकारा?''

''नहीं। साड़ी तो माँ को बहुत अच्छी लगी। मैं यहाँ आया हूँ, तुमसे एक जरूरी बात करने।'' भीम ने कहा।

''कहो, ऐसी ज़रूरी बात क्या है?'' अरुणा ने पूछा।

भीम ने सकपकाते हुए कहा, ''तुमसे शादी करना चाहता हूँ।''

''यह मुझसे क्यों पूछते हो? तुम्हारे घर के बड़े लोग आयें और मेरे माता-पिता से बात करें।'' अरुणा ने कहा।

''बड़ों की बातें तो बाद में होंगी ही। मैं उससे पहले जानना चाहता हूँ कि मैं तुझे अच्छा लगता हूँ या नहीं। इसीलिए तुमसे मिलने यहाँ चला आया।'' भीम ने कहा। क्षण भर तक अरुणा, भीम के चेहरे को ध्यान से देखती रही और फिर बोली, ''तुम सुंदर हो, अच्छे स्वभाव के हो। मुझे अच्छे भी लगते हो, इसीलिए तो मैंने साड़ी खरीदने में तुम्हारी मदद की।''

तब भीम ने अपनी माँ के बारे में पूरा विवरण दिया और कहा, ''अपनी अक्लमंदी और चतुराई से क्या तुम मेरी माँ को बदल पाओगी? खूब सोच लेना।'' भीम ने उसे सावधान करते हुए कहा।

यह सोचने के लिए अरुणा को ज़्यादा समय नहीं लगा। उसे बिल्व महर्षि की याद आयी।

अरुणा ने एक समय महर्षि की सेवा-शुश्रूषाएँ की थी। तब उस महर्षि ने अरुणा से कहा था, ''पुत्री, हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं। कोई वर माँगो, दूँगा।''

तब अरुणा निर्णय नहीं कर पायी थी कि क्या वर माँगा जाए। उसने थोड़ी अवधि माँगी थी। बिल्व महर्षि ने उसकी बात मान ली और कहा, ''आँखें बंद करके तीन बार मेरे नाम को उच्चारित करने पर मैं प्रत्यक्ष होऊँगा और जो वर तुम चाहोगी, दूँगा।'' यों कहकर वे वहाँ से चले गये थे।

अरुणा ने भीम को अब बिल्व महर्षि की कहानी सुनायी और कहा, ''लगता है, तुम्हारी माँ को बदलना किसी साधारण मनुष्य के लिए संभव नहीं है। हम बिल्व महर्षि की सहायता लेंगे।'' कहती हुई उसने बिल्व महर्षि का नाम तीन बार लिया।

बिल्व महर्षि तत्क्षण ही प्रत्यक्ष हो गये। अरुणा की चाह को सुनने के बाद उन्होंने भीम से कहा, ''चलो पुत्र, हम तुम्हारी माँ से मिलते हैं।''

महर्षि भीम के साथ उसके गाँव आये। भीम के घर में प्रवेश किया और पलंग पर लेटी सोच में मग्न गंगा से कहा, ''माँ, मुझे भिक्षा दीजिए।''

गंगा चौंककर उठ बैठी और कर्कश स्वर में कहने लगी, ''भीख माँगने आये हो लेकिन भीख माँगने का क्या यही तरीक़ा है?'' फिर वह महर्षि को गालियाँ देने लगी।

''माँ, चाहो तो भीख दो, नहीं तो चले जाने को कहो। तुम्हारी गालियाँ भूतनी बनकर तुम्हें ही सतायेंगी।'' बिल्व महर्षि ने कहा।

''गालियाँ देने की मेरी आदत है। माँ-बाप और सास-ससुर को गालियाँ दीं। पर इससे मुझे कोई नष्ट नहीं पहुँचा। जैसी थी, वैसी ही हूँ।'' गंगा ने कटु स्वर में कहा।

''मुझसे कोई त्रुटि हो गयी हो और इसके लिए तुम मुझे गालियाँ दोगी तो वह गाली मेरे लिए शाप बन जायेगी। अकारण ही मुझे गालियाँ दोगी तो वे गालियाँ तुम्हारे ही पास रह जायेंगी और तुम्हारे लिए शाप बन जायेंगी। तुम्हें यह सच्चाई मालूम होनी चाहिए, इसलिए अकारण ही तुमने जो गालियाँ दीं, वे भूतनी बनकर तुम्हारे सामने प्रत्यक्ष होंगी और यह मेरी आज्ञा है।'' बिल्व महर्षि ने कहा।

बस, उसी क्षण गंगा के सामने भयानक आकार में एक भूतनी प्रत्यक्ष हो गयी। भूतनी

कहने लगी, ''गंगा, मैं गालियों की भूतनी हूँ। चार सालों के बाद तुम्हें रोगग्रस्त बनाने का मेरा इरादा है। इस रोग का इलाज नहीं हो सकता।''

गंगा भयभीत हो गयी। उसके सामने कोई और चारा नहीं था, इसलिए महर्षि के पैरों पर गिर पड़ी और कहने लगी, ''महर्षि, मुझे माफ़ कर दीजिए। ग़लती हो गयी।'' महर्षि ने उसे उठाया और कहा, ''भूतनी उसी का नाश करती है, जो तुम्हें बहुत प्रिय है। तुम्हारे घर के पिछवाड़े में तुम्हारे बहुत ही प्रिय फल आम का पेड है। उससे कहो कि वह उस आम के पेड़ का नाश करे। भूतनी तब तुम्हें छोड़ देगी।''

गंगा ने 'हाँ' कह दिया तो भूतनी गायब हो गयी। पिछवाड़े में जाकर देखा तो वहाँ आम का पेड नहीं था।

तब महर्षि ने बड़े ही शांत स्वर में कहा, ''गंगा, आगे से किसी को भी अकारण गाली मत देना। जब कभी भी अकारण गाली देने लगोगी, भूतनी प्रत्यक्ष हो जायेगी और तुम्हें सजा देगी। भविष्य में तुम्हारा व्यवहार अच्छा रहा हो तो कोई भी भूतनी तुम्हारे पास तक आने की जुर्रत नहीं करेगी। एक और मुख्य बात सुनो। गंगापुर में अरुणा नामक एक लड़की है। अपने बेटे की शादी उससे करना। वह बहुत अच्छी लड़की है। अक्लमंद है।

अपनी बहू का आदर करोगी, उसकी अच्छी देखभाल करोगी तो तुम्हारी गालियों की भूतनी की शक्ति क्रमशः घटती जायेगी और अंत में वह हमेशा के लिए अदृश्य हो जायेगी। याद रखो, तुम्हारे कष्ट-सुख तुम्हारे अन्दर निहित हैं, तुमसे ही हैं, तुम पर ही हैं।'' यह कहकर बिल्व महर्षि वहाँ से चले गये।

कुछ दिनों के बाद भीम का बिवाह अरुणा के साथ संपन्न हो गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद कहा, ''राजन्, स्पष्ट लगता है कि बिल्व महर्षि के दिये बरदान का सदुपयोग अरुणा ने अपने लोगों के लिए नहीं किया बल्कि भीम की भलाई के लिए किया। मेरी दृष्टि में उसका यह काम अनुचित व अविवेकपूर्ण है। मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रहोगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''कोई भी माँ-बाप यही चाहेंगे कि उनकी बेटी का बिवाह हो, वह सुखपूर्ण जीवन बिताये। मुझे ऐसा लगता है कि अरुणा ने अपने बर का उपयोग अपने और अपने माँ-बाप के आनंद के लिए ही किया। साधारणतया पुरुष चिड़चिड़े स्वभाव के होते हैं। परंतु भीम सहनशील, शांत और कोमल स्वभाव का है। कोई भी स्त्री ऐसे ही पुरुष को चाहती है। आगे उसके स्वभाव में भी कोई परिवर्तन नहीं आयेगा, क्योंकि गालियों की भूतनी की शक्ति उसने स्वयं जान ली। इसलिए अरुणा का निर्णय न ही अनुचित है, न ही अविवेकपूर्ण।''

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।''

(आधार - 'वसुंधरा' की रचना)

अपने भारत को जानो

प्रश्नोत्तरी

कुछ स्थानों की अपनी विशिष्टताएँ होती हैं, जिनके कारण वे लोकप्रिय या प्रसिद्ध हो जाते हैं। विचित्रताओं अथवा लोगों के सन्दर्भ में जो इन्हें प्रसिद्ध बनाते हैं, निम्नलिखित स्थानों को पहचानो।

१. जापान को 'उगते हुए सूरज का देश' कहा जाता है। भारत के किस भाग में सूर्य की किरणें पहले पड़ती हैं?

२. किस राज्य में जन जाति की जन संख्या का अधिकतम प्रतिशत रहता है?

३. एक राज्य में नृत्य की अपनी शैली है। कवीन्द्र रवीन्द्र ने इसे विश्व भर में लोकप्रिय बना दिया। वह कौनसा राज्य है?

४. एक राज्य में बडी संख्या में बुद्ध बिहार हैं और इसी के आधार पर इसका नाम पडा है। वह कौनसा राज्य है?

५. जब अंग्रेज़ भारत पर दिल्ली से शासन कर रहे थे, तब उनकी ग्रीष्म राजधानी कहीं और थी। किस राज्य के किस नगर को यह सौभाग्य प्राप्त था?

६. किस राज्य में लोकतांत्रिक चुनाव द्वारा विश्व की पहली साम्यवादी सरकार बनी?

७. फ्रांसिसी वास्तुविद ल कारबुज़िए ने एक आधुनिक नगर की अभिकल्पना की। यह नगर दो राज्यों की राजधानी है। नगर का नाम क्या है? वे दो राज्य कौनसे हैं?

८. कुंभ मेला चार भिन्न-भिन्न स्थानों पर लगता है। दो ऐसे स्थान एक ही राज्य में हैं। वह कौनसा राज्य है?

(उत्तर अगले महीने)

जनवरी प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. नेताजी सुभाषचन्द्र बोस।

२. मगनलाल गाँधी ने 'सदाग्रह' शब्द का निर्माण किया, जिसका अर्थ होता है - अच्छे कार्य के लिए इच्छा। गाँधीजी ने इसे सत्याग्रह में रूपान्तरित कर दिया।

३. सन् १९१६ में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में।

४. लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, विपिन चन्द्र पाल।

५. १९०५।

६. १८५७।

७. सन् १९२९ के ३१ दिसम्बर को कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में।

८. सन् १९२८ में सर जॉन साइमन के नेतृत्व में, भारतीय नेताओं के साथ प्रशासनिक सुधार पर बिचार-विमर्श के लिए।

९. २४ अगस्त १९४६।

१०. बाल गंगाधर तिलक।

नागालैण्ड की एक लोककथा

नागालैण्ड हमारे देश के उत्तरी-पूरबी कोने में बसा हुआ एक प्राणवन्त पर्वतीय राज्य है। इसके उत्तर में अरुणाचल प्रदेश और आसाम, दक्षिण में मणिपुर, पश्चिम में आसाम और पूरब में म्यानमार (पूर्व नाम बर्मा) है।

राज्य का क्षेत्रफल १६,५२७ वर्ग किलोमीटर और इसकी जनसंख्या २००१ जनगणना के अनुसार १९ लाख ८८ हजार ६३६ है। इसकी समुद्र तल से ऊँचाई अनुमानतः १४९० मी. है।

नागालैण्ड को, जिसकी राजधानी कोहिमा है, १९६३ में १ दिसम्बर को राज्य बनाया गया और यह भारतीय संघ का १६वाँ राज्य बना। यहाँ की मुख्य भाषाएँ अंग्रेजी, हिन्दी और नागामिज़ हैं।

नागा पर्वतीय शृंखला की सर्वोच्च चोटी सरमती समुद्र तल से ३८७७ मी. की ऊँचाई पर है। प्राकृतिक सुषमा और परिदृश्य के लिए विख्यात कोहिमा एक पहाड़ी पर्यटक स्थल है।

समुद्रतल से १९५ मी. की ऊँचाई पर स्थित दीमापुर राज्य का प्रवेशद्वार है।

कोहितो को शान्ति मिली

नागालैण्ड के एक छोटे गाँव जुंहीबोतो में १४ साल का एक अनाथ और उपेक्षित बालक रहता था। गाँववाले हमेशा अपने काम धन्धे में व्यस्त रहते थे। कोहितो अन्य ग्रामीण लडकों के साथ मोरंग (कुंवारे लड़कों के लिए शयनागार) में रहता था, और उसे यद्यपि किसी प्रकार हर रोज खाना तो मिल जाता था पर इसके अतिरिक्त उसे और कुछ नहीं मिल पाता था। बह दाओ (एक प्रकार

की बर्छी) बनाना, और टोकरी बुनना सीखना चाहता था और जंगल में शिकार करना चाहता था, किन्तु उसे कोई सिखानेवाला नहीं था।

"खिसको यहाँ से, ओ छोकरे!" जब भी टोकरी बुननेवाला कोहितो को अपनी दूकान पर देखता तो वह उसे भगा देता और बत्ती गुल कर देता। लड़का निराश हो इधर-उधर भटकता रहता।

एक दिन उसने युवा नेडली को अपना दाओ पजाते हुए देखा। "क्या तुम मुझे बर्छा बनाना सिखा दोगे?" उसने पूछा।

"अभी नहीं। फिर कभी। तुम्हारी तरह मेरे पास समय नहीं है।" उस युवक ने कहा।

कोहितो को इस पर गुस्सा आ गया। वह चलता बना और गाँव के बाहर बाँस के एक झुरमुट के पास पहुँचा। "मेरे पास हमेशा समय ही समय है, लेकिन किस काम का?" उसने कस कर मुट्ठी बाँधते हुए सोचा। "मुझे उनका सम्मान पाने के लिए कुछ करना होगा। मुझे कुछ ऐसा काम करना होगा जिसे इस गाँव के किसी नागा ने पहले नहीं किया हो।" इस विचार ने उसे उत्तेजित कर दिया। उसने ऐसे काम करने के विषय में सोचना शुरू किया, जिनसे उसके ग्रामीण भाई उसके कृतज्ञ रहें।

तभी उसे एक गीत का स्वर सुनाई पडा। गाँव की लडकियाँ कुछ दूरी पर रास्ते से गुज़र रही थीं। उनके खंग (कंधे से लटकती बाँस की टोकरी) में बर्तन थे और वे कुछ मील दूर पहाड़ी की घाटी में बहती नदी से पानी भरने जा रही थीं। यह मार्ग लम्बा था और समय काटने के लिए वे गीत गा रही थीं। इससे कोहितो के मन में एक विचार आया। पानी!

उसके गाँव की सबसे विकट समस्या थी जल की। यदि वह एक कुआं खोद सके तो इससे गाँववाले इतना परिश्रम करने से बच जायेंगे। तब वे उसकी उपेक्षा नहीं करेंगे। कोहितो ने निश्चय किया कि वह ठीक वहीं पर कुआं खोदेगा। लेकिन वह गाँववालों को तब तक नहीं बतायेगा जब तक कुआं तैयार न हो जाये, क्योंकि वे शायद उसके इस विचार का केबल मज़ाक उड़ायेंगे।
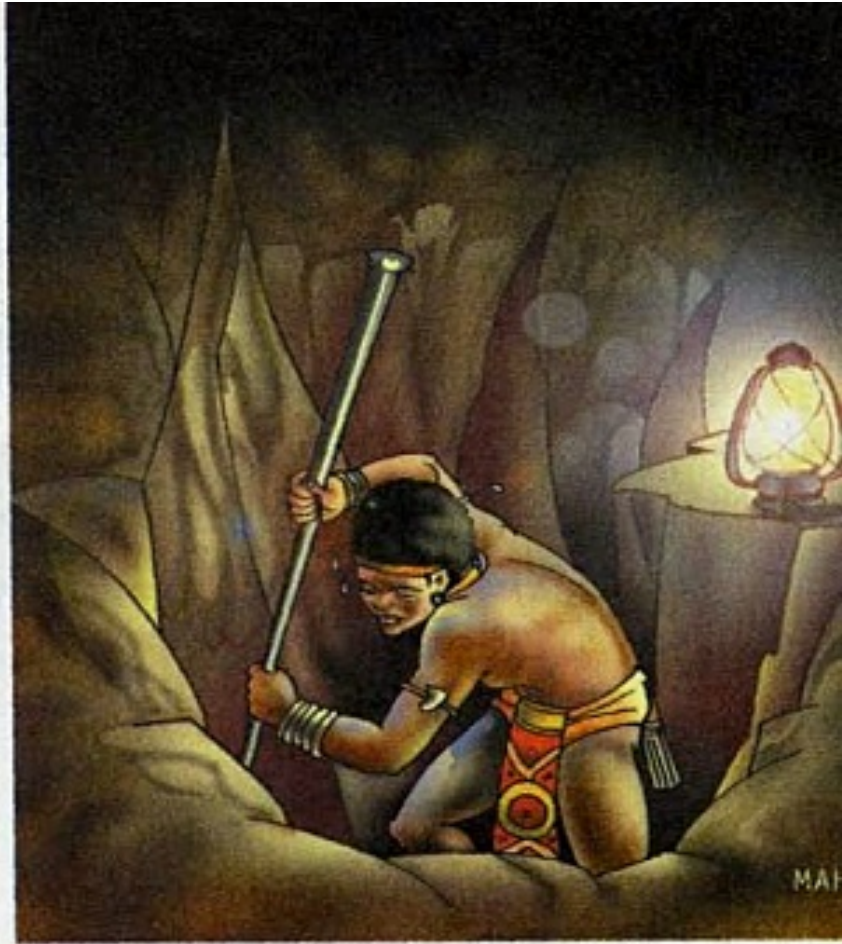
उसने कुआं खोदना आरम्भ कर दिया। इतने छोटे लडके के लिए यह कार्य कठिन था। किन्तु कोहितो ने हिम्मत नहीं हारी। वह कुआं खोदता रहा और खोदता रहा जब भी वह कर सकता था।

कई वर्ष बीत गये और जब वह पानी की गहराई तक पहुँचा तब तक वह एक तगड़ा युवक हो चुका था। एक दिन ताजे पानी का फव्वारा फूट पड़ा और उसका चेहरा तर-बतर हो गया। वह खुशी से उछल पड़ा। आखिरकार आ गया पानी!

कुछ दिनों में उसका कुआं प्रयोग में आने लगा। उसने अपना चुंगास (बाँस का बना हुआ कप)

मानव-सिर का शिकार

प्राचीन काल में मानव-सिर का शिकार करना नागा जीवन शैली की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी। जिसके पास कम से कम एक सिर का भी श्रेय न होता, उसकी हँसी उड़ाई जाती और उसे आसानी से दुल्हन नहीं मिलती। नागा लोग मनुष्यों का शिकार करते और उनके सिर को अपने घरों में ट्रॉफी की तरह सजा कर रखते।
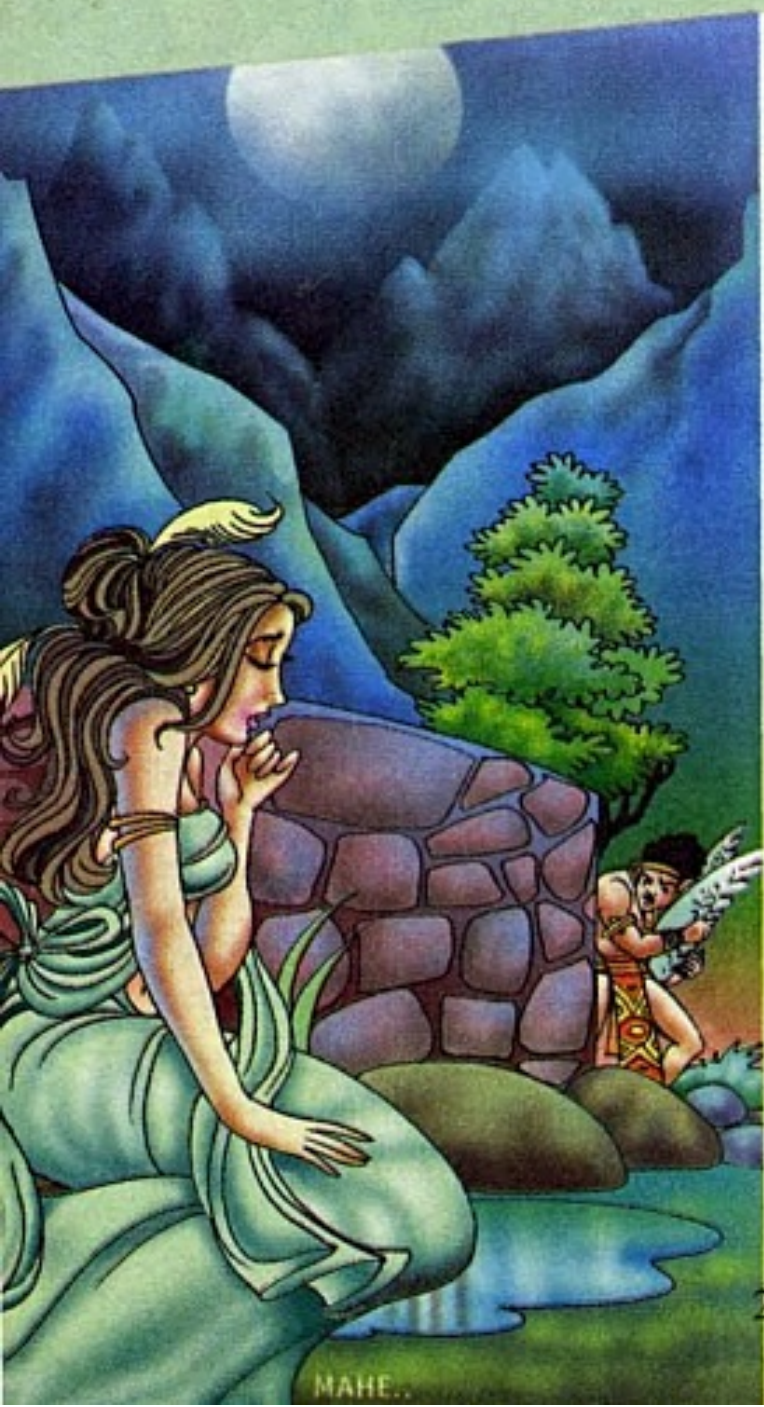
निकाला और उसमें पानी भरकर एक लम्बा घूंट लिया। जब उसने लड़कियों को नदी के मार्ग पर गाते हुए सुना तो उनके पास जाकर बोला, ''पानी के लिए इतना दूर क्यों जाती हो? मेरे कुएँ पर आ जाओ। एक दम स्वच्छ जल है।'' पहले उन लड़कियों ने इसका विश्वास नहीं किया। लेकिन उत्सुकतावश देखने के लिए वे सब कोहितो के साथ चल पड़ीं। उन्हें कुएं में कलकल करता हुआ शीतल जल देखकर बहुत आश्चर्य हुआ।

शीघ्र ही पूरे गाँव को कोहितो के कुएं की जानकारी मिल गई। सभी ग्रामीण बड़े प्रभावित हुए। कोहितो अब बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति था।

किन्तु बहुत दिनों तक नहीं। जब कोहितो की प्रसिद्धि बढ़ गई, तब किन्नर भी बादलों के पार अपने लोक से कुएं पर आने लगे। निस्सन्देह किन्नर कुमारियाँ रात्रि में चन्द्रोदय के पश्चात वहाँ उतरती थीं, स्नान करती थीं और भोर तक कूद-फाँद करती थीं। इसलिए पानी गंदा हो जाता था। पंखों के अंश, फूल और सब तरह की चीज़ें पानी पर तैरती रहती थीं।

गाँव के लोग इस पर नाराज़ हो गये। ''किसने

कुएं को इतना गंदा कर दिया?'' उन्होंने कोहितो से पूछा। बेचारा कोहितो ! भला उसे क्या मालूम। लेकिन गाँववालों ने उसकी बात का विश्वास नहीं किया। ''तुम ज़रूर दूसरों को इसका प्रयोग करने देते हो। इसीलिए कुआं अब पहले के समान साफ नहीं रहता।'' उन सब ने कोहितो से कहा। ''यदि ऐसा ही होता रहा तो हम सब तुम्हें गाँव से बाहर कर देंगे।''

कोहितो ने निश्चय किया कि मुझे इसके लिए कुछ न कुछ करना होगा। ''गाँववालों का सम्मान पाने में मुझे वर्षों लगे हैं। मैं इतनी आसानी से इसे जाने नहीं दूँगा।'' उसने मन ही मन सोचा।

इसलिए वह एक रात कुएं के पास छिप गया और प्रतीक्षा करने लगा। कुछ किन्नर कुमारियाँ हर रोज की तरह आईं। उन्होंने अपने पंख उतारे और पानी में उतरने से पूर्व उन्हें ज़मीन पर रख दिये। ''ओ ! तो तुम हो अपराधी।'' कोहितो ने सोचा। ''तुम सब गाँव में मेरा नाम खराब कर रहे हो। मैं तुम सब को पाठ सिखा कर रहूँगा।'' वह धीरे से छिपता हुआ पंखों के पास गया और एक जोड़ी लेकर वापस अंधकार में अदृश्य हो गया।

जब उषा की पहली अरुणिमा से क्षितिज रक्ताभ होने लगा तो किन्नर कन्याएँ कुएं से बाहर निकलीं। उन्होंने अपने-अपने पंख लगाये और उड़ती बनीं। केवल एक किन्नर बाला रह गई। ''ठहरो, मुझे भी आने दो।'' वह चिल्लाई। सहेलियों ने ध्यान नहीं दिया। अन्त में वह अकेली चिल्लाती हुई रह गई।

कोहितो अब बाहर आया। ''अब मैं तुम्हें जाने नहीं दूँगा। तुम्हारी सहेलियों के लिए यह एक सबक होगा और फ़िर कभी लौटकर यहाँ नहीं आयेंगी।'' उसने डपटते हुए कहा। किन्नर बाला विलख कर रो रही थी। वह कितनी सुन्दर और असहाय लग रही थी। ''क्या तुम मुझसे विवाह करोगी? मैं तुम्हारी ठीक से देखभाल करूँगा।'' कोहितो ने कहा। किन्नर बाला के पास कोई विकल्प न था। इसलिए वह राजी हो गई।

कोहितो ने उससे विवाह कर लिया और उसे गाँव में ले गया। दोनों ने मिलकर अपने लिए एक घर बनाया। बहुत वर्ष बीत गये। यद्यपि किन्नर

जनजातियाँ

नागालैण्ड जनजातियों की भूमि है। इस राज्य में १४ मुख्य जनजातियों का पता लगाया गया है। उनमें से सबसे महत्वपूर्ण हैं - अंगामी, आव, चखेसांग, चांग, खेमुंगन, कोन्यक, लोथा और फोम। प्रत्येक जनजाति की पृथक परम्पराएँ और रीतिरिवाज हैं और बोलियाँ भी। वेशभूषा, अलंकार और शिरस्त्राण भी हर जनजाति के अलग-अलग हैं। ये जनजातियाँ अब कई उपजनजातियों में विभक्त हो गई हैं।

फिर भी बादलों के बीच अपने घर की याद उसे बराबर आती थी।

जब भी कोहितो काम पर बाहर जाता, वह अपने पंख ढूँढ़ने लग जाती। लेकिन कोहितो ने उसे इतनी अच्छी तरह छिपा दिया था कि वह कहीं उन्हें नहीं पा सकी। "कहाँ हो सकता है?" एक दिन वह चकित हो सोच रही थी। "निश्चित ही वह ऐसा स्थान होगा जो मुझे अच्छा न लगे और मैं वहाँ न जाऊँ। मुरगी के दरबे में शायद।" अचानक विचार आया। वह आशान्वित होकर उठी और दरबे के निकट गई।

वह जगह गन्दगी से भरी थी और बदबू इतनी आ रही थी कि वह वहाँ से भाग जाना चाहती थी। फिर भी, जब उसने दरबे में हाथ डाला तो चूजों ने किटकिटाना शुरू कर दिया और मुर्गी

बाला ने मांस और चावल पकाना, जुथो और रुही (चावल की शराब) तैयार करना, टोकरी बनाना और नागा गीत गाना सीख लिया था,

कुड़कुड़ाती हुई आई और उसके सुन्दर हाथ पर चंचु-प्रहार किया। फिर भी वह साहसपूर्वक दरबे में टटोलती रही। उसके हाथ ने कुछ कोमल और

हस्तकला

अधिकांश परम्परागत नागा नक्काशी और वस्त्र-अभिकल्पना के पीछे उनका मूल भाव सिर का शिकार है।

काष्ठ नक्काशी, बाँस के काम तथा मिट्टी के बर्तन के लिए नागा प्रसिद्ध हैं। नागा जंगलों में बाँस और बेंत प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। इसीलिए नागा लोग टोकरी बनाने में दक्ष होते हैं। वे बाँस से ढाल और चटाई भी बनाते हैं। बेंत से कण्ठहार, बाजूबन्द और टंगत्राण भी बनाये जाते हैं।

रोमिल वस्तु के स्पर्श का अनुभव किया। कुछ झटके देकर खींचने पर वह बाहर आ गया। अरे, सचमुच उसके पंख! यद्यपि वे थोड़े गन्दे, बदबूदार और उधड़े हुए थे, फिरभी पंख थे।

उसने उसे झाड़ा-पोंछा और अपनी पीठ पर कस लिया। और बिना पीछे देखे आकाश में बादलों के बीच अपने घर की ओर वह उड़ गई।

रात होने पर जब कोहितो घर पहुँचा तो उसकी पत्नी का कहीं पता न था। वह इधर-उधर पागल की तरह उसे ढूँढ़ता रहा और जो भी दिखाई दे जाता उससे पूछता रहा। लेकिन किसी ने उसे देखा नहीं था। वह तेज़ी से दरबे की ओर भागा और पंख टटोलने लगा। वे गायब थे। अब उसे मालूम हो गया कि वह उसे खो चुका है। वह गहरे शोक में डूब गया।

वह अपनी झोंपड़ी के सामने बैठकर रोने लगा। अचानक एक श्वेत काक उड़कर उसके पास आया और बोला, ''मत रो कोहितो। मैंने उसे उड़कर जाते हुए देखा है। यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें वहाँ ले जा सकता हूँ, लेकिन इसके बदले में तुम्हें मेरी सहायता करती होगी।''

''ओह! मैं अवश्य करूँगा। बताओ, क्या करना है?,'' कोहितो ने वचन देते हुए कहा।

''मुझे काला कौआ बना दो। मैं सफेद रंग से परेशान हूँ। मेरे विचित्र रूपरंग के कारण मेरी बिरादरी के लोगों ने मेरा बहिष्कार कर दिया है।''

कोहितो ने वचन दिया कि किन्नर लोक पहुँचने पर मैं तुम्हें काला बना दूँगा। वह फिर कौए की पीठ पर बैठकर आकाश की ओर उड चला।

बहुत दूर तक उड़ने के बाद अन्त में बादलों के बीच वे किन्नरों के देश में पहुँच गये। किन्नरों ने कोहितो को उसकी पत्नी के पास पहुँचा दिया

शब्दावली

मोरुंग - अविवाहित लड़कों के लिए शयनागार
दाव - एक प्रकार का बर्छा
खांग - कंधे पर पहननेवाली बाँस की टोकरी
चुंगस - बाँस का प्याला
किन्नर - परियों के समान आकाश में रहनेवाले एक प्रकार के प्राणी
जुथो और रुही - चावल की शराब

और उसने इसका बड़े प्रेम से स्वागत किया। वास्तव में वह, जिस प्रकार कोहितो को त्याग कर आई थी, उसके लिए शर्मिन्दा थी। ''मुझे अब पृथ्वी पर लौट जाने के लिए न कहो।'' उसने अनुरोध किया। ''अब हम लोग शान्ति और सुख से यहीं रहें।''

कोहितो निस्सन्देह मान गया।

वाग्विदग्ध - तेनालीरामन

विजयनगर के राजा कृष्णदेवराया के दरबार में एक दिन दो परिचर एक विशाल चित्र को दोनों किनारों से पकड़े हुए दरबारियों को दिखा रहे थे। यह पूर्ण वैभव में राजा का चित्र था। इसे अच्छी तरह देखने के बाद राजा वापस राजसिंहासन पर आसीन हो गया।

उसे दरबारियों से दबी आवाज में कुछ 'आह' और 'उह' सुनाई पड़ा। ''मैंने चित्रकार को एक हजार मुद्राएँ दी हैं।'' राजा ने कहा। ''आप लोग इसके बारे में क्या सोचते हैं।'' उसने उनकी टिप्पणी सुनने के लिए दरबारियों पर नज़र डाली।

राजा के समीप बैठा हुआ एक दरबारी उठा। ''यह बहुत अच्छा है, महाराज।'' उसने एक लम्बी मुस्कान के साथ कहा। ''चित्र हूबहू आपकी तरह है। किसने बनाया, महाराज?''

राजा ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने ''हाँ, बहुत अच्छा, कितना वास्तविक दिखता है!'' आदि टिप्पणियाँ सुनीं। पर वह निराश दिखाई पड़ा। ''हे तेनाली ! क्या आपको कुछ नहीं कहना है?'' राजा ने अपने प्रिय दरबारी से पूछा।
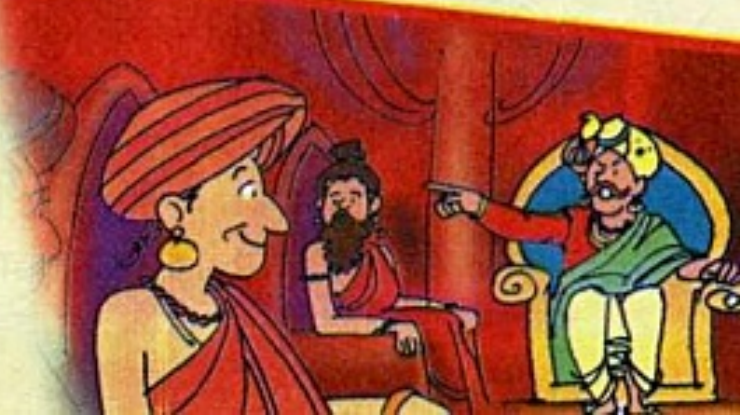
"किन्तु महाराज! आपके मुखमण्डल का दूसरा पार्श्व किधर है?" तेनालीरामन ने कहा। "मैं इससे अच्छा चित्र किसी दिन बना सकता हूँ।" राजा को क्रोध आ गया। "जब चित्र को देखते हैं, तब बहुत कुछ कल्पना करनी पडती है। जाओ! बिना चित्र के वापस न आना।"

एक महीने के पश्चात। "तेनाली कहाँ है? क्या अभी तक वह चित्र बना रहा है?" राजा ने पूछा। एक दरबारी ने कहा, "किसी ने उसे चित्र बनाते नहीं देखा।" एक अन्य दरबारी बोला, "क्या वह तूलिका भी पकड़ना जानता है?" तेनालीरामन और अन्य दो व्यक्तियों के दरबार में प्रवेश के साथ उपहासपूर्ण हँसी और शान्ति।

तेनालीरामन ने झुककर निवेदन किया, "क्या मैं आपकी आज्ञा से अपना चित्र दिखा सकता हूँ? राजा ने सिर हिलाकर सहमति दी। दो व्यक्तियों ने एक लम्बे चीरक को खोला। दरबारियों ने उसे देखने के लिए अपनी गरदनें उठायीं। राजा की भौंहें चढ़ गईं। "यह कैसा चित्र है? मुझे घोड़े की केवल पूँछ दिखाई देती है।"

"महाराज! शेष आपको कल्पना करनी है।" तेनाली ने खीसें निपोरते हुए कहा। घोड़ा घास खाकर आगे बढ़ गया है। इसीलिए उसका शरीर चित्र से बाहर है।

तुम अपने देश और इसके लोगों को कितना जानते हो? यहाँ हमारे पूरे विस्तृत और विशाल देश के भारतीय जीवन के कुछ अनोखे, कुछ विचित्र और कुछ रोचक तथ्य हैं। इस लेखमाला का प्रयास होगा तुम्हें भारत के लोक जीवन के निकट ले जाना। शुभ वाचन!

भारत दर्शक

विश्व का प्रथम शल्य चिकित्सक

हो सकता है वह बहुत पहले धुंधले अतीत में रहा हो, किन्तु वह निश्चय ही अपने समय से आगे था। चलें, सुश्रुत से मिलते हैं, जिसने, ऐसा विश्वास है कि लगभग ईसा पूर्व ८०० सन् में मोतिया बिन्द, प्रसव, पथरी, मूत्राशय तथा कान्ति वर्द्धक शल्य भी किया था।

एक ओर जहाँ उसने बाह्य घाव की सिलाई के लिए पशु और पौधों का तन्तु और बाल का प्रयोग किया, वहीं दूसरी ओर सुश्रुत ने शरीर के भीतरी भागों की सिलाई के लिए काली चींटियों का प्रयोग किया।

घाव के दोनों किनारों को एक साथ मिला दिया जाता और काली चींटियों को एक के पास एक करके तब तक रख दिया जाता जब तक उनके जबड़े घाव के दोनों किनारों को चिमटे के समान पकड़ नहीं लेते। इसके बाद चींटियों के शरीर उनके सिर से हट जाते। केवल जबड़े मनुष्य के शरीर के अन्दर रह जाते। काली चींटियां की उपयोगिता विचित्र है।

केरल का ब्रेक-नृत्य

क्या होगा जब पचास तगड़े आदमी लकड़ी के मंच पर निरन्तर बहुत समय तक पाँव पटक कर प्रहार करेंगे? निस्सन्देह बेचारा मंच धराशायी हो जायेगा। विश्वास करो या न करो केरल के एक अल्प ज्ञात लोक नृत्य *चवितु नाटकम* के प्रदर्शन के इस शानदार समापन की सबको बड़ी उत्सुकतापूर्ण प्रतीक्षा रहती है।

जब सोलहवीं शताब्दी में पुर्तगाली केरल में आये तब उनके साथ यूरोप की ओपेरा परम्परा भी आई। इसके साथ जब स्थानीय कत्थकली परम्परा का संगम हुआ तब चवितु नाटकम के रूप में नृत्य नाटिका शैली का प्रादुर्भाव हुआ। इसमें ईसाई पुराणों और यूरोपीय इतिहास की कथाओं को नृत्य नाटिका में ढाला जाता और पात्र रंगमंच पर अपने संवाद स्वयं बोलते। कत्थकली के समान ये नाटक अधिकांशतः युद्धों और द्वन्द्व युद्धों के चरमोत्कर्ष पर समाप्त होते जिनमें प्रायः पचास व्यक्तियों को मंच पर आना पड़ता। और मंच, जो सामान्यतः बहुत मजबूत लकड़ी का बना होता यदि उन पचास बलशाली नर्तकों के पद-प्रहार से नहीं टूट जाता तो प्रदर्शन को लोग सफल नहीं समझते थे।

ठण्डे कश्मीरी

बर्र.....र, तुम कश्मीर में हो और शरद ऋतु की ठण्ड बर्दाश्त नहीं कर सकते! तुम्हें आश्चर्य होगा कि मौसम के विषय में कश्मीरी इतने ठण्डे (अथवा इतने गर्म) क्यों हैं। कैसे वे रख पाते हैं गरम-गरम मुस्कुराहट और इतने चमकीले चेहरे।

यह रहस्य है उनकी अंगीठी में जो अपने कपड़ों के अन्दर हमेशा रखते हैं। अंगीठी मिट्टी का एक छोटा बर्तन होता है, जिसमें कोयले का अंगार होता है। यह एक छोटी-सी बेंत की टोकरी में रखा जाता है जिसे कश्मीरी अपनी कमर में बाँध लेते हैं। इस प्रकार वे अपने चारों ओर गरमाहट फैलाते हैं।

मलखंभ कोशिश करो

मलखंभ खेल का वर्णन दसवीं शताब्दी के चालुक्य कालीन साहित्य में मिलता है। यद्यपि ऐसा लगा कि यह खेल उसके बाद लुप्त हो गया, इसे उन्नीसवीं शताब्दी में पेशवा बाजी राव द्वारा पुनर्जीवित किया गया। आज मलखंभ कई रूपों में खेला जाता है और राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की जाती हैं।
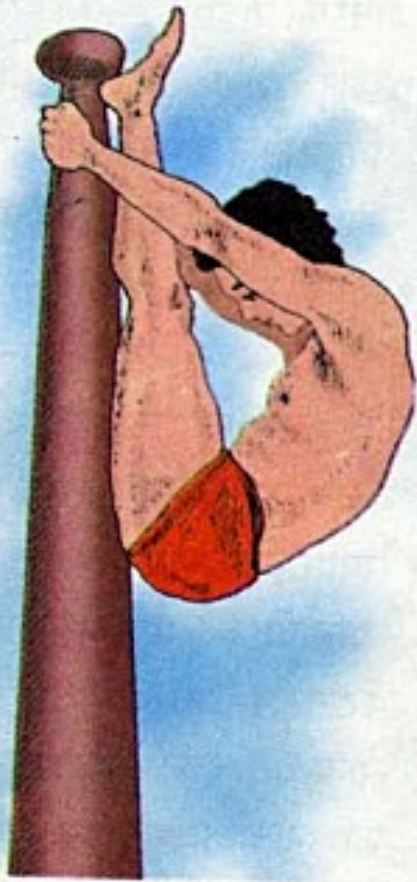
मलखंभ भारत का एक प्राचीन खेल है। विशेषकर महाराष्ट्र का। मलखंभ एक प्रकार का व्यायाम है, जिससे खिलाड़ी की नमनीयता, फुरती और शारीरिक क्षमता की परीक्षा होती है। एक लम्बा खंभा मैदान में गाड दिया जाता है और खिलाडी उस पर अपने शरीर को मरोड़ते और घुमाते हैं तथा संतुलन रखते हुए भिन्न-भिन्न प्रकार का व्यायाम करते हैं।

यह छलावा नहीं

धान के खेत में मछली? क्या तुम्हें यह छलावा लगता है? अपतनी लोगों से पूछो। अरुणाचल प्रदेश के इस जनजाति-समुदाय ने मछली के साथ धान की खेती की यह अनोखी प्रणाली खोज निकाली है। वे धान के आप्लावित सीढीदार खेतों में उस समय मछली छोड़ देते हैं, जब पौधे इतने मजबूत हो जाते हैं कि मछलियाँ उन्हें कुतर न सकें। और मछलियों के खाने के लिए उनमें छोटे प्राणियों और पौधों को डाल देते हैं। इस प्रकार जब धान कटाई के लिए तैयार हो जाता है, तब मछली भी तैयार रहती है।

भारतीय पर्व

वसन्त पंचमी

वसन्त ऋतु का आगमन सम्पूर्ण भारत में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। यह पर्व प्रति वर्ष माघ महीने के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि (जनवरी-फरवरी) को पड़ता है। पूरबी भारत में लोग इसे सरस्वती पूजा के रूप में मनाते हैं। सरस्वती देवी ज्ञान - कला, विज्ञान, हस्तशिल्प के मूर्त्त रूप हैं। वे शक्ति, सृजन और प्रेरणा की भी प्रतिनिधि हैं।

पश्चिम बंगाल में इस दिन सरस्वती की प्रतिमाओं की पूजा की जाती है। प्रतिमा के सामने पुस्तकें और वाद्य यंत्र रखे जाते हैं। बच्चे इस दिन पढ़ाई नहीं करते। प्रतिमाओं को नदी या समुद्र में विसर्जित कर दिया जाता है। छात्रगण दूसरे दिन प्रार्थना करने के बाद किताबें खोलते हैं। इस अवसर पर इस राज्य की छोटी लड़कियाँ भी साड़ी पहनती हैं।

सरस्वती देवी की पूजा फूलों से विशेषकर बसक (जस्टिशिया जेन्डारुसा) और पीले रंग के गेंदा से की जाती है, जो इस ऋतु का प्रतिनिधित्व करता है।

उत्तर भारत में, खासकर पंजाब में वसन्त पंचमी पतंग उड़ाने का दिन माना जाता है। इस दिन अनेक पतंग प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं।

वसन्त ऋतु में प्रकृति का सौंदर्य और प्राचुर्य

पराकाष्ठा पर होता है। देश के उत्तरी भागों में सरसों के चमकीले खिले-खिले फूलों से खेत भर जाते हैं। शायद सरसों के पीले फूलों को अंकित करने के लिए अथवा बसन्त के उल्लास में सहभागी बनने के लिए लोग इस दिन पीले वस्त्र धारण करते हैं।

कार्निवाल

फरवरी महीने में गोवा का सम्पूर्ण वातावरण हँसी-खुशी और संगीत से गूंजने लगता है। इसका कारण है, तीन दिवसीय वार्षिक त्यौहार जिसे कार्निवाल कहते हैं। यह उल्लास और आमोद-प्रमोद का समय होता है।

गोवावासियों का विश्वास है कि बहुत पहले गोवा के राजा मोमो ने यह आदेश जारी किया कि उसकी प्रजा आनन्दोत्सव के दिन कोई काम न करे। उसने घोषणा की : ''मैं राजा मोमो एतद् द्वारा गोवा राज्यान्तर्गत कार्नवाल की अवधि में कोई भी समझदारी का काम करने से सबको मना करता हूँ।'' लगता है, आमोदप्रिय राजा होगा।

गायकों और नर्तकों की मंडलियाँ रंग-बिरंगे-सजे बेड़ों पर अपनी कला का दिन भर प्रदर्शन करते हैं। बेड़े भिन्न-भिन्न आकृतियों के होते हैं और इस अवसर के लिए विशेष रूप से बनाये जाते हैं। मौज-मस्ती करनेवाले मजाकिया और रंग बिरंगे मुखौटे पहनते हैं।

इस अवसर के लिए छोटे-छोटे नाटक लिखे जाते हैं, जो प्रायः ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित होते हैं। इन्हें फेलोस कहा जाता

ह और इन्हें बेड़ों पर मंचित भी किया जाता है। परम्परा के अनुसार कार्निवल की अवधि में खेले गये नाटकों में केबल पुरुष ही सभी भूमिकाएँ निभाते हैं। इन नाटकों के बीच-बीच में संगीत और नृत्य के ढेर सारे कार्यक्रम रखे जाते हैं।

पुरुष अभिनय के लिए अंगराग की मोटी परत लगाते हैं और रंगीन पोशाक तथा पारम्परिक टोपी पहनते हैं। ये लोग कार्निवाल से महीनों पूर्व फेलोस का अभ्यास करते हैं। नाटक प्रातःकाल जल्दी ही आरम्भ हो जाते हैं और रात भर चलते हैं। अभिनय कर्त्ताओं के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान तक लोगों की भीड़ चलती है। गोवा में पुर्तगाल के शासनकाल में कार्निवाल का नाम 'पोरको ए ब्रुटल' यानी 'गन्दा और पाशविक' था।

सन् १७०० के उत्तरार्ध में कार्निवाल समारोह में मुख्यतः गलियों में नकली लड़ाई होती थी। यह लड़ाई सड़े अण्डों और आटा अथवा खड़िया की बुकनी से भरी थैलियों से होती थी।

डोसमॉश

डोसमॉश एक प्राचीन परम्परा है जिसका जम्मू और कश्मीर अन्तर्गत लद्दाख निवासी अभी तक निर्वाह करते आ रहे हैं। प्रत्येक बर्ष फरवरी माह में लेह का महल ढोल के संगीत पर जीवन्त हो उठता है। इस अवसर पर भिन्न-भिन्न मठों के लामा मुखौटा लगाकर नृत्य-नाटिका का प्रदर्शन करते हैं। लामा प्रथागत आहुति तैयार करते हैं, उसे निवेदित करते हैं और फिर उसे यज्ञ के रूप में नष्ट कर देते हैं।

डो अथवा सूत्रजाल मुख्य आहुति होती है, जिन्हें तक्थोक मठ के लामा बनाते हैं। वे ज्योतिष, तन्त्र और इसी प्रकार के अन्य विषयों के मर्मज्ञ माने जाते हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि जब लामा अपेक्षित अनुष्ठान करते हैं और निर्धारित मंत्र का उच्चारण करते हैं तब आहुति में दुष्ट आत्माओं, भूखे भूतों और आसुरिक शक्तियों को बश में करने की सामर्थ्य आ जाती है।

दस भिन्न-भिन्न प्रकार और आकार की आहुतियों को मिलाने के बाद ही मुख्य आहुति सम्पूर्ण मानी जाती है। तब उन्हें जुलूस के साथ मुख्य गलियों और बाजार में घुमाया जाता है। संगीतकार और मठ का वाद्य-दल आगे-आगे और काले टोप-नर्तक, लामा और ठाट-बाट से सजे स्थानीय लोग पीछे-पीछे चलते हैं।

नगर के सीमान्त पर जुलूस समाप्त हो जाता है, जहाँ आहुतियों को बड़े धूमधाम के साथ जलाकर नष्ट कर दिया जाता है। यह सब अनिष्ट और अशुभ से बचने तथा आगामी वर्ष में संभावित प्राकृतिक प्रकोपों से रक्षा के लिए किया जाता है।

आजकल मध्यावकाश के कार्यक्रम के रूप में लोकनृत्य के अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं।

ऐश बुधवार

ऐश बुधवार इस वर्ष २० फरवरी को पड़ता है। ईसाई धर्मावलम्बी इस दिन अपने छोटे-बड़े पापों के पश्चाताप के प्रतीक के रूप में अपने ललाट पर एक छोटा-सा भस्म का क्रूस बनाते हैं। पादरी या पुरोहित मॉस के प्रारम्भ में सभी एकत्र लोगों के ललाटों पर एक चिह्न अंकित करते हैं।

इस अवसर पर प्रयुक्त भस्म विगत वर्ष के खजूर रविवार के दिन अभिमंत्रित ताड़ पत्रों से बनाया जाता है। पवित्र जल के साथ भस्म को छिड़का जाता है और सुगन्ध के साथ धूमित किया जाता है।

सभी ईसाई धर्मावलम्बियों के लिए यह अवसर उन चालीस दिनों को अंकित करता है जब भगवान ईशु ने अपना उपदेश प्रारम्भ करने के पूर्व उपवास में निर्वासित जीवन बिताया था।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि ३२ वर्ष की आयु में ईशु ने स्वयं बपतिस्मादाता जॉन से दीक्षा ली और उपदेश देने व रोगहरण आरम्भ करने से पूर्व चालीस दिनों का उपवास किया।

इस तरह ऐश बुधवार चालीस यानी विशेष शुद्धीकरण एवं तपस्या की अवधि के आरम्भ का सूचक है। इस अवधि में ईसाई धर्मावलम्बी सामिष भोजन का वर्जन करते हैं तथा अन्त में ईस्टर पर्व मनाते हैं।

भारत की गाथा

एक महान सभ्यता की झाँकियाँ : युगों-युगों से सत्य के लिए इसकी खोज

२५. कथा-सागर की कथा

संदीप बहुत प्रसन्न था क्योंकि स्कूल के वार्षिकोत्सव के अवसर पर खेला गया नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तलम' बहुत सफल रहा। कण्व के रूप में संदीप की भूमिका सराहनीय थी।

''मैंने ग्रैंडपा से प्राचीन ऋषियों के बारे में इतना सुन रखा था कि कण्व का चरित्र बिलकुल अपरिचित नहीं लगा।'' संदीप ने कहा।

''मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि दुर्वासा की भूमिका में तुम्हें कहीं अधिक सफलता मिलती।'' चमेली ने टिप्पणी की।

''चुप रहो।'' संदीप ने डाँटा।

''मेरी राय से सहमत होने के लिए धन्यवाद।'' चमेली ने तालियाँ बजाते हुए कहा।

उनके मित्रों के साथ, जो रविवार को वहाँ प्रायः आ जाते थे, सब के सब हँस पड़े।

''क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है कि कई शताब्दी पूर्व लिखे गये नाटक को लोग आज भी इतना पसन्द करते हैं।'' संदीप के एक मित्र पोल्टू ने अपना विचार प्रकट करते हुए कहा। ''मैं समझता हूँ कि ग्रैंड पा ने इसे उतना ही पसन्द किया जितना कभी राजा विक्रमादित्य ने किया होगा।''

- विश्वावसु -

''मुझे इसमें निस्सन्देह बहुत आनन्द आया, किन्तु राजा विक्रम को और भी अधिक आनन्द आया होगा । नाटक का मंचन स्मरणीय घटना थी । और तब राजा ने संस्कृत में संवाद सुना था, उस भाषा में जिसमें यह लिखा गया । अंग्रेज़ी अनुवाद में वह प्रभाव नहीं आ सकता जैसे शेक्सपियर का संस्कृत में अनुवाद करने पर उसका सम्मोहन जाता रहेगा ।'' प्रो. देवनाथ ने कहा ।

''ग्रैंडपा, क्या यह वही विक्रमादित्य था जिसके दरबार में कालिदास कवि थे?'' चमेली ने पूछा ।

''क्या तुम इतिहास में एक ही विक्रमादित्य के बारे में पढ़ते हो? विक्रमादित्य के नाम से अनेक राजा हो गये हैं, जिसका अर्थ होता है सूर्य के समान शक्तिशाली । उनमें से एक था गुप्त वंश का चन्द्रगुप्त द्वितीय जिसकी राजधानी उज्जैन थी । वह ईसवी सन् ४ में हुआ था ।

एक और शक्तिशाली विक्रमादित्य ईसा पूर्व पहली शताब्दी में भी हुआ था । उसके राज्य की स्मृति में एक सम्वत चलाया गया जिसे विक्रम सम्वत कहते हैं । यह सम्वत ईसा के ५८ वर्ष पूर्व प्रारम्भ किया गया । कालिदास, अपने समय में विख्यात, किन्तु हम लागों के लिए अज्ञात उसी विक्रम के दरबारी कवि रहे होंगे अथवा हो सकता है, चन्द्रगुप्त द्वितीय के दरबार के कवि हों ।

''लेकिन 'राजा विक्रम और बेताल' नाम से प्रसिद्ध क्रमिक कथाओं में वर्णित राजा कौन है?'' चमेली ने पूछा ।

''हाँ, मेरे बच्चे ! यह मुझे यह सोचने के लिए बाध्य करता है कि ईसवी सन् एक में उज्जैन में विक्रमादिति नाम का एक राजा था । विक्रम और बेताल कथाओं का लेखक गुणाढ्य भी ईसा सन् एक में हुआ था । वह राजा की ख्याति और शक्ति से बहुत प्रभावित होगा ।''

''लेकिन, ग्रैंडपा, हमारे अध्यापक ने यह बताया है कि विक्रम और बेताल कथाओं का लेखक सोमदेव था ।'' संदीप ने कहा ।

''तुम्हारे अध्यापक ग़लत नहीं हैं और न ही मैं ग़लत कहता हूँ । सोमदेव बहुख्यात 'कथासरित सागर' का लेखक था । क्रमिक कथाएँ जिसकी तुम चर्चा कर रहे हो, इसी ग्रंथ के अंश हैं । लेकिन 'कथा सरित सागर' स्वयं एक दूसरे ग्रंथ - 'बृहत कथा' का भाग है जो सोमदेव से हजार वर्ष पूर्व गुणाढ्य द्वारा लिखा गया था । उस बृहत कृति में अवश्य ही बहुत-

सी रोचक कथाएँ होंगी, जिसका महत्तर अंश हम लोगों के लिए लुप्त हो गया ।''

''क्यों लुप्त हो गया?'' पोल्टू ने पूछा ।

''वह एक दुखद कथा है ।'' प्रोफेसर ने कहा, और उसका वर्णन किया :

अभी पैठान के नाम से ज्ञात नगर का मौलिक नाम प्रतिष्ठान था । दो हजार वर्षों से भी अधिक पहले यहाँ शतवाहन वंश का राज्य था । इनमें से एक शतवाहन राजा के दरबार में गुणाढ्य नाम का एक विद्वान था ।

एक बार राजा ने संस्कृत सीखने का निश्चय किया । गुनाढ्य ने कहा कि इस भाषा को अच्छी तरह सीखने में उन्हें कई बर्ष लग जायेंगे । किन्तु दूसरे विद्वान ने दावा किया कि वह राजा को सिर्फ़ छः महीनों में संस्कृत सिखा देगा ।

''यदि तुम ऐसा कर दो तो मैं संस्कृत में लिखना छोड़ दूँगा ।'' गुणाढ्य ने झुंझलाकर कहा ।

राजा वास्तव में अध्ययनशील व्यक्ति था और छः महीनों में यह प्रमाणित हो गया कि उसे संस्कृत का अच्छा ज्ञान है । गुणाढ्य ने न केवल संस्कृत में लिखना छोड़ दिया बल्कि नगर छोड़ने का भी निश्चय कर लिया ।

''मेरे अच्छे मित्र, यदि तुम्हें नगर छोड़ना ही है तो किसी उपयोगी कार्य में समय का सदुपयोग करो । मेरी सलाह है कि तुम समस्त देश का पर्यटन करो और देश के भिन्न-भिन्न भागों में प्रचलित लोक कथाओं का संकलन करो । फिर उन्हें जन भाषा में लिख डालो ।'' राजा ने सलाह दी ।

गुणाढ्य ने यह सलाह मान ली । उसने हिमालय से कन्याकुमारी तक भ्रमण किया, सैकड़ों लोगों से भेंट की और उनसे हजारों कहानियाँ सुनीं । उसने उन्हें अलग-अलग भागों

में बाँट दिया। वर्षों गुजर गये। आखिर वह ताड़-पत्र की पांडुलिपियों से लदी बैल गाड़ी के साथ प्रतिष्ठान लौटा। उसे राजा से भव्य स्वागत की आशा थी। पर किसी कारणवश वह शांत रहा। अपमानित अनुभव करने के कारण गुणाढ्य उन पांडुलिपियों को एक पहाड़ी की चोटी पर ले गया। मेघावृत संध्या का समय था। उसने आग जलाई। उस आग के प्रकाश में उसने अपने संकलन का प्रथम भाग पढ़ा। यह प्रकृति के विषय में था। जब वह कहानियाँ पढ़ रहा था, तब बादल क्रीड़ा करने लगे और शीतल हवा बहने लगी। लेकिन जब उसने ताड़ पत्रों को आग में फेंक दिया तब हवा प्रचण्ड हो गई और बादल गरजने लगे।

तब उसने दूसरे भाग की पशु-पक्षियों और वृक्षों से संबंधित कहानियाँ पढ़ीं। अनेक पशु सुनने के लिए उसके निकट आ गये और पक्षी चोटी के वृक्षों पर उतर आये। और जब उसने उन्हें आग की लपटों में झोंक दिया तो पशु गुर्राने लगे और पक्षी अपने पंख फड़फड़ाने लगे और वृक्ष आग की लपटों को बुझाने के लिए झुक गये, किन्तु व्यर्थ।

यह तब तक चलता रहा जब तक कोई इसके बारे में बताने के लिए राजा के पास नहीं गया। राजा स्वयं दौड़ा हुआ आया। विद्वान को गले लगा लिया और आग को बुझा दिया। किन्तु तब तक सम्पूर्ण संकलन के पाँच भागों में से चार जलकर राख हो चुके थे। कश्मीर के राजा अनन्त के दरबार के विद्वान सोमदेव ने ग्यारहवीं शताब्दी में उन्हें संस्कृत में अनूदित किया। राजा और रानी अपनी वृद्धावस्था में बहुत दुखी थे, क्योंकि उनके पुत्र का आचरण ठीक नहीं था। सोमदेव की कहानियों ने उन्हें बड़ी सान्त्वना दी।

''कहानियों के पीछे कितनी उपदेशात्मक कहानियाँ हैं!'' चमेली ने विस्मय प्रकट किया और शेष सब ने उसकी भावना को प्रतिध्वनित किया।

विघ्नेश्वर

देवताओं और राक्षसों ने मिलजुलकर क्षीर सागर का मंथन किया। फलस्वरूप उन्हें अमृत प्राप्त हुआ। विष्णु ने जगन्मोहिनी का रूप धारण करके राक्षसों को चकमा दिया और देवताओं को अमृत दिलाया। अमृत पीने से देवता अमर हो गये। अमरत्व पाकर देवता घमंडी हो गये और निष्कंटक घूमने-फिरने लग गये। तारकासुर से राक्षसों के साथ किये गये इस अन्याय को देखा नहीं जा सका। उसने घोर तपस्या की। ब्रह्मा से उसने अमरता का वरदान माँगा।

''जन्म लेने के बाद किसी न किसी दिन मरना निश्चित है, अटल है। कुछ और माँगो,'' ब्रह्मा ने सुझाव दिया।

तारकासुर ने अच्छी तरह से सोचने-विचारने के बाद वर माँगा, जिसके अनुसार अगर उसकी मौत होगी तो वह केवल शिव के पुत्र के हाथों ही होगी। ब्रह्मा ने अपनी स्वीकृति देकर उसकी इच्छा पूरी की। तब तक शिव की पत्नी सतीदेवी दक्ष यज्ञ की योगाग्नि में अपनी आहुति दे चुकी थी। शिव उन्मादी की तरह घूमते रहे और अंत में हिमालय पर्वत प्रांत में बैरागी बनकर घोर तपस्या में लीन हो गये।

तारकासुर ने सब राक्षसों को इकट्ठा किया और तीनों लोकों को अपने अधीन कर लिया। वह देवताओं को खूब सताने लग गया। इंद्र आदि देवता भयभीत होकर ब्रह्मा से रक्षा की भीख माँगने गये।

तब ब्रह्मा ने उनसे कहा, ''मैं तारकासुर को वर दे चुका हूँ। वह किसी और के हाथों नहीं मरेगा। शिव का पुत्र ही उसे मार सकने की शक्ति रखता है। और यह तभी संभव होगा, जब शिव का पुत्र जन्मेगा।'' यों कहकर ब्रह्मा देवताओं को लेकर विष्णु के पास गये। उनका मानना था कि विष्णु ही इसके लिए कोई मार्ग सुझा पायेंगे।

विष्णु ने उनसे बताया, "सतीदेवी हिमवंत की पुत्री बनकर पल रही हैं। अब हमें कोई ऐसा उपाय ढूँढ़ निकालना चाहिए, जिससे शिव और पार्वती का विवाह संपन्न हो।"

देवताओं ने नारद को हिमवंत के पास भेजा। नारद के आदेश के अनुसार हिमवंत तपस्या में मग्न शिव के पास गये। उनकी पूजा की और अभ्यर्थना की कि वे उनकी पुत्री पार्वती को उनकी सेवा करने का, उनकी परिचर्या करने का अवसर दिया जाए।

शिव के मौन को स्वीकृति मानकर हिमवंत ने पार्वती को शिव की परिचर्या करने का भार सौंपा।

बचपन से ही पार्वती शिव को बहुत चाहती थी। बाल्यकाल से नारद उसे शिव के बारे में बहुत कुछ कहा करते थे। शिव के सद्गुणों, महिमाओं तथा तत्संबंधित कथाएँ सुनने के लिए वह तत्पर रहती थी। ऐसे शिव की सेवा करने का उसे अब अवसर मिला। यह वह अपना महाभाग्य मानने लगी।

सूर्योदय के पहले ही वह उस स्थल को मोर के पंखों से साफ़ करती थी, जहाँ शिव तपस्या में लीन थे। हिम जल में वह सुगंधित चंदन का मिश्रण करती थी और छिडकती थी। मोतियों की रंगोली सजाती थी।

सुवर्ण लताओं से बुनी, रत्नों व वज्रों से खचाखच भरी टोकरी में शिव को बहुत ही पसंद फल-फूलों को सजाकर ले जाती थी और उनके समीप रखती थी। हिमशिखरों से गिर रहा स्फटिक जल सुवर्ण कमंडल में भरती थी और जपमाला के साथ उसे सजाकर रखती थी। शिव को आकर्षित करने के लिए अनेक प्रकार से अपना अलंकार करके जाती थी। भैरवी, मुखारि, केदार, शिवरंजनी आदि राग शिव के इष्ट राग थे। वह उन रागों का मधुर आलापन करती थी। वह बारंबार इसी प्रयत्न में लगी रहती थी कि शिव अपनी दृष्टि उस पर पसारें। तपस्या में लीन शिव आँख खोलकर उसे बस, एक बार देख लें, इसी की उसे प्रतीक्षा थी। वह शिव के मनोहर मुखारविंद को देखती ही रहती थी। कभी-कभी उसे लगता था कि वह शाश्वत रूप से इस भाग्य से वंचित ही रह जायेगी, जिसके कारण उसके हृदय में निराशा घर कर गयी।

देवेंद्र को लगा कि शिव की तपस्या में ख़लल पहुँचाने की शक्ति केवल कामदेव को है। उसने

कामदेव से विनती की कि वह कोई ऐसा उपाय करे, जिससे शिव पार्वती पर आसक्त हों, पार्वती पर मुग्ध हों।

कामदेव रतीदेवी के साथ तोते के रथ में बैठकर निकला। रथ का सारथी था वसंत। उसके बाण थे पुष्प। धनुष था गन्ना। वह सन्नद्ध होकर हिमालय के शिखरों के मध्य स्थित घाटी में पहुँचा, जहाँ शिव तपस्या में मग्न थे। देखते-देखते उस घाटी में वसंत ऋतु फैल गयी। प्रकृति बड़ी ही शोभायमान व रमणीय लगने लगी। कोयलों की कूक तथा भंवरों के गुंजन से सब कुछ रसीला लगने लगा। शिव को जब लगा कि प्रकृति में अकस्मात् परिवर्तन हो गया है तो उन्होंने अपनी आँखें खोलीं। प्रकृति में अकस्मात् ही आये वसंत ऋतु के इस आगमन को देखकर उन्हें अपार आश्चर्य हुआ। तपोभंग पर उन्हें दुख हुआ और उनके हाथ से जपमाला फिसल गयी। पार्वती भूमि पर गिरी जपमाला जब शिव को दे रही थी तब झाड़ियों के पीछे छिपे कामदेव ने शिव के हृदय को अपना निशाना बनाकर बाण छोड़ा। बाण के छूते ही शिव का शरीर सिहर उठा। उन्होंने तब उस पार्वती को देखा, जो घुटने टेककर बैठी हुई थी और एकटक उन्हीं को निहार रही थी। पार्वती का मुखबिंब उन्हें बड़ा ही मनोहर, आकर्षक व लुभावना लगा।

क्षण भर में वे संभल गये। अपने तपोभंग पर वे चकित रह गये। उनमें क्रोध उमड़ आया। उन्होंने अपनी तीसरी आँख खोली तो उन्हें

कामदेव दिखाई पड़ा। शिव के ललाट नेत्र से ज्वाला निकली जिसमें कामदेव भस्म हो गया। शिव तुरंत वहाँ से उठ खडे हुए और कैलास के शिखराग्र पर पहुँच गये।

रतीदेवी उस समय अपने पति कामदेव के साथ ही थी। वह पति के भस्म पर गिरकर रोने लगी। ब्रह्मा और देवता वहाँ प्रत्यक्ष हुए। उन्हें रतीदेवी को सहगमन से रोका और समझाया कि जिस दिन शिव और पार्वती का विवाह संपन्न होगा उस दिन कामदेव जीवित लौटेगा। भस्म की रक्षा करते हुए रतीदेवी ने अनेक दिन और रातें वहीं बिता दीं।

अब पार्वती को अपने सौंदर्य में विश्वास नहीं रहा। शरीर के लावण्य के प्रति उसकी अब कोई रुचि नहीं रहीं। उसे लगा कि अब जीना व्यर्थ है।

शिवरंजनी बनकर वह तपस्या करने लगी। थोड़े पत्ते मात्र खाती हुई वह तपस्या में लीन रही। जया, विजया नामक दो सहेलियाँ मात्र उसके साथ थीं। वे उसके योगक्षेम के बारे में मेनका व हिमवंत को बराबर सूचित करती रहती थीं। कुछ दिनों के बाद पार्वती ने पर्ण (पत्ते) खाना भी छोड़ दिया और बिना कुछ खाये तपस्या करती रही। अब वह अपर्णा के नाम से पुकारी जाने लगी।

शिव ने कामदेव को भस्म तो कर दिया पर उसके बाण के प्रभाव से छुटकारा नहीं पा सके। पार्वती की तपस्या भी सफल होने लगी।

छद्म वेष में शिव पार्वती से मिलने गये और उसके अंतःकरण की परीक्षा की। पार्वती के हृदय को उन्होंने जाना और उससे विवाह करने का निश्चय किया। सप्त ऋषियों को हिमवंत के पास विवाह के विषय में बात करने भेजा। यह जानकर कि स्वयं शिव ने उनकी पुत्री पार्वती से विवाह रचाने का प्रस्ताव भेजा है, हिमवंत हर्षातिरेक से झूम उठे।

प्रमथगणों के पीछे-पीछे दुल्हा बनकर शिव हिमवंत के घर गये। इस विवाह के अवसर पर ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र तथा सप्त ऋषियों के साथ-साथ असंख्य महर्षि, नारद तथा मुनिगण भी पधारे।

सुमंगली अरुंधती ने शिव के ललाट नेत्र पर कल्याण तिलक लगाया। दुल्हे के वेष में शिव अति मनोहर लग रहे थे। तब सब लोग उन्हें सुंदरेश्वर के नाम से संबोधित करने लगे।

सब प्रकार के अलंकारों से सजायी गयी दुल्हन पार्वती को विष्णु शिव के पास ले आये और कहा, "तुम सुंदरेश्वर हो तो मेरी बहन पार्वती मीनाक्षी देवी है।" यह कहते हुए उन्होंने पार्वती के दायें हाथ को शिव के दायें हाथ में थमाया और दोनों को विवाह-मंडप में बिठाया।

शिव-पार्वती का विवाह वैभवपूर्वक संपन्न हुआ। हिमालय की घाटी में जहाँ शिव एवं पार्वती ने तपस्या की, वहाँ देवशिल्पी विश्वकर्मा ने उनके लिए एक दिव्य अंतःपुर का निर्माण किया।

शिव और पार्वती जिस मार्ग से अंतःपुर जा रहे थे, उसी मार्ग में कामदेव का भस्म पड़ा हुआ था। उस भस्म के पास ही रतीदेवी रोती-बिलखती बैठी हुई थी। उसकी आँखों से अश्रु-धारा बह रही थी। वह घुटने टेककर हाथ फैलाकर

बैठी हुई थी। ऐसा लगता था मानों वह पति के प्राण की भिक्षा माँग रही हो।

शिव-पार्वती दोनों उसके पास गये। उन दोनों ने उसके सिर पर हाथ रखे और दीर्घ सुमंगली होने का आशीर्वाद दिया। शिव ने फिर से अपना तृतीय नेत्र खोला, पर इस बार उसमें ज्वाला नहीं थी। जैसे ही उन्होंने अपनी शीतल दृष्टि भस्म पर पसारी, कामदेव निजी रूप में जीवित प्रकट हुआ और अदृश्य हो गया।

तब शिव ने रतीदेवी से कहा, "देवि, तुम्हारे पति का पुनः जन्म हुआ है। वह सदा यथावत् तुम्हें दिखायी देता रहेगा। तुम्हारे सिवा किसी और को वह दिखायी नहीं पड़ेगा। वह दूसरों को दिखायी पड़ना चाहता है या नहीं, यह इसकी इच्छा पर निर्भर होगा। ऐसा वरदान मैं उसे दे रहा हूँ।"

शिव-पार्वती ने गृह प्रवेश किया। अरुंधती ने आरती उतारकर उनका स्वागत किया। तब विश्वकर्मा ने परदे के पीछे छिपायी गयी एक लंबी पट्टी को उनके सामने खड़ा करके कहा, "यह एक अभूतपूर्व चित्र है। इस चित्र में आप दोनों चित्रित हैं। इस चित्र को देखते हुए हम जैसे इस निर्णय पर नहीं आ सके कि आप दोनों में से कौन सुंदर है। मेरा विश्वास है कि आप दोनों में से ही कोई यह सत्य बताने की योग्यता रखते हैं। इसीलिए मैंने यह आपके सम्मुख रखा। कृपया बताइये।"

वह आदमकद का आइना था। आइने में दोनों ने अपने को देखा और मुस्कुरा पड़े। तब नारद ने कहा, "मुस्कुराहट इसका उत्तर नहीं है। आपको बताना ही पड़ेगा कि आप दोनों में कौन अधिकाधिक सुंदर हैं।"

शिव ने तिरछी नज़र से पार्वती को देखते हुए कहा, "कहना क्या है? स्पष्ट है। शुक्र की तरह प्रकाशमान नथवाली यह चित्ताकर्षक सुंदरी ही सौंदर्य राशि है।" पार्वती शिव से अपनी प्रशंसा सुनकर शरमाती हुई बोली, "उस नथवाली स्त्री के पुरुष का सौंदर्य ही सृष्टि में महान है।"

सबने शिव-पार्वती पर पुष्पों की वर्षा की। फिर नये दंपति अलंकृत झूले में बैठकर झूलने लगे।

उनके सामने ही विशाल दीवार पर एक मनोहर चित्र चित्रित था। चित्र में दिखाया गया था कि हाथियों की एक जोड़ी नृत्य कर रही है और दोनों अपने पीछे के पैरों के बल पर एक दूसरे के सामने

खड़े हैं। उनकी सूंडें एक-दूसरे से लिपटी हुई हैं। उन दोनों हाथियों के बीच में एक सरोवर दिखायी दे रहा है, जिसमें एक बड़ा पद्म विकसित हो रहा है। उस चित्र में चित्रित हाथियों की जोड़ी पर शिव-पार्वती की दृष्टि पड़ी। इतने में चित्र में जहाँ पद्म था, वहाँ से चाँदनी की तरह की ज्योति फूट पड़ी। वह ज्योति क्रमशः बढ़ती गयी और व्याप्त होती गयी। उस प्रकाश में शशिवर्ण में चमक रहे विघ्नेश्वर उन्हें दिखायी पड़े।

विघ्नेश्वर का मुख हाथी का ही मुख है, फिर भी उस मुख में दिव्य आभा विराजमान है। प्रसन्नता टपक रही है। उनकी दृष्टि उनकी बौद्धिक शक्ति का परिचायक है। उनका भरा पेट कांतिमय है। अभयहस्त लिये खड़ा विघ्नेश्वर पार्वती को बहुत ही भाये।

विघ्नेश्वर को देखते हुए शिव-पार्वती ने अनिर्वच आनंद का अनुभव किया। उस आनंद में विभोर होकर वे दोनों विघ्नेश्वर को एकटक देखते रहे। विघ्नेश्वर अपनी बायीं सूंड को संभालते हुए मीठी आवाज़ में बोले, ''मैं विघ्नेश्वर हूँ। विघ्नों को रोकनेवाला विनायक हूँ। पंच भूतगणों का अधिपति हूँ, गणपति हूँ, चित्र विचित्र रूपधारी चित्रगणपति हूँ। आप दोनों के प्रेम के फलस्वरूप शिव की तेजस्विता को लिये कुमारस्वामी का जन्म होगा और वह तारकासुर का अंत कर देगा। कुमारस्वामी के पहले ही मैं जन्म लूँगा। पुत्रगणपति होकर मैं अवतरित होऊँगा।'' उनकी मीठी बातों पर मुग्ध पार्वती ने उन्हें अपने हाथों में लेने के लिए हाथ फैलाये। फिर विघ्नेश्वर ज्योति सहित अदृश्य हो गये।

शिव-पार्वती आनंद सागर में डुबकियाँ लगाते हुए जीवन-यापन करने लगे। उसी समय जग को हिला देनेवाला, कंपा देनेवाला एक उपद्रव उठ खड़ा हुआ। *(सशेष)*

भविष्यवाणी

चंद्रगिरि का राजा चतुरवर्मा हमेशा हँसता रहता था और दूसरों को भी हँसाता रहता था। उसका विचार था कि जीवन क्षणभंगुर है। किसी भी क्षण प्राणी की मृत्यु हो सकती है। मनुष्य थोड़े ही यहाँ शाश्वत रूप से रहनेवाला है! इसलिए उसे चाहिए कि वह हर पल आनंद के साथ गुज़ारे। वह सदा नूतनता चाहनेवालों में से था।

एक दिन शाम को राजा और रानी बगीचे में टहल रहे थे। अचानक राजा ने रानी से कहा, ''इन पेड़ों और फूलों को हम हर दिन देखते रहते हैं। इनमें कोई नयापन है ही नहीं। तुम कुछ ऐसी बातें करो, जिनमें कोई नयापन हो।''

पति की बातों पर रानी हँसती हुई बोली, ''आप भी बड़े अजीब आदमी हैं। हर रोज़ नई-नई बातें कहाँ से लाऊँ, क्या कहूँ?''

राजा सोच में पड़ गया। थोड़ी देर बाद उसने कहा, ''तो ऐसा करते हैं। अब इस माली के साथ गपशप करेंगे और अपना समय गुजारेंगे। मज़ा आ जायेगा।'' पौधों को पानी से सींचते हुए माली को उसने बुलाया।

माली दौड़ता हुआ आया। वह उसके सामने हाथ बांधकर खड़ा हो गया। राजा ने अपने गले से मोतियों का हार निकाला और उसे दे दिया। राजा जानना चाहता था कि अप्रत्याशित प्राप्त हार को पाकर माली क्या करेगा और क्या कहेगा। परंतु माली ने इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखायी। चुपचाप उसने उस हार को अपने कपड़ों में छिपा लिया और जाने के लिए मुड़ा।

माली के इस व्यवहार पर राजा चकित रह गया। उसने माली से पूछा, ''देखो, बिना किसी कारण के ही मैंने तुझे यह मूल्यवान हार दिया। फिर भी तुम्हें न ही आश्चर्य हुआ, न ही आनंद। क्यों?''

- नरेंद्र ठक्कर -

''प्रभु, पहले से ही मुझे मालूम था कि आज या कल आप मुझे यह हार देनेवाले हैं।'' माली ने कहा।

उसकी इस बात पर आश्चर्य प्रकट करते हुए राजा ने पूछा, ''पहले से ही यह तुम जानते थे? यह कैसे संभव है? किसने तुम्हें बताया?''

''यह एक मुनिवर की भविष्यवाणी है, प्रभु।'' माली ने कहा। फिर वह यों कहने लगा। ''चार दिन पहले मैं पूरबी पर्वतों के तले स्थित अपने गाँव में गया। ग्रामवासियों ने मुझसे कहा कि वहाँ एक मुनीश्वर आये हुए हैं और उनकी बतायी भविष्यवाणी हमेशा सच निकलती है। मैं उस मुनि को देखने गया। मुझे देखते ही उन्होंने अपने हाथ में रखे दण्ड को ऊपर उठाया और कहने लगे, ''तुम बड़े ही भाग्यवान हो पुत्र, शीघ्र ही राजा तुम्हें एक हार देनेवाले हैं।''

यह सुनाने के बाद माली ने कहा, ''प्रभु, जैसे ही आपने मुझे बुलाया, मैं समझ गया कि आप मुझे हार देनेवाले हैं।''

उसकी बातें सुनकर राजा स्तंभित रह गया। रानी ने बड़ी ही आतुरता से राजा से कहा, ''हम भी मुनिवर के दर्शन करेंगे।''

राजा कुछ कहने ही वाला था कि इतने में माली ने कहा, ''वे स्त्रियों को दर्शन नहीं देते।''

यह जानकर रानी चिंतित हो गयी और उसने राजा से कहा, ''महामुनियों का व्यवहार कभी-कभी हम जैसे साधारण मनुष्यों की समझ में नहीं आता। मैं नहीं जा सकती तो क्या हुआ, आप उनके दर्शन करने अवश्य जाइये।''

राजा को रानी की चाह पसंद नहीं आयी। उसने कहा, ''देवि ! पहले ही से हमें भविष्य मालूम हो जाए तो जीवन का मज़ा नहीं ले पायेंगे।''

''आप क्यों ऐसा सोचते हैं? जीवन को और सुंदर रूप से भी मोड़ सकते हैं। आपको जाना ही होगा।'' रानी ने जिद की।

राजा रानी की बात को टाल न सका और दूसरे ही दिन रथ में बैठकर मुनि के दर्शन करने गया। लेकिन शाम को लौटा चिंताग्रस्त होकर। उसके चेहरे पर यह चिंता स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही थी। रानी ने कई बार इस चिंता का कारण पूछा। किन्तु राजा मौन ही रहा। कोई उत्तर नहीं दिया।

"आप मुझसे कुछ छिपा रहे हैं। कहिये, उस मुनीश्वर ने क्या बताया। मेरी क़सम, आपको बताना ही पड़ेगा।" राजा के हाथ को अपने सिर पर रखते हुए रानी ने कहा।

तब राजा ने धीमे स्वर में जो कुछ हुआ, सब बता दिया। राजा के पैरों में पहने हुए वज्रखचित जूतों को देखते ही मुनि ने कहा, "राजन्, शीघ्र तुम्हारी दयनीय स्थिति होगी। यहाँ तक कि तुम्हारे पैरों में जूते भी नहीं होंगे। जूतों के लिए तुम्हें दूसरों के सामने हाथ फैलाना पड़ेगा। एक भील युवक तुम्हें फिर से मुकुट पहनायेगा।"

मुनि की बातें सुनकर राजा भय से काँप उठा। उसे लगा, मानो उसके पैरों के नीचे की ज़मीन हट रही है। बिना कुछ कहे, मौन धारण करके वह लौट पड़ा।

"देवि ! मुनि की भविष्यवाणी से लगता है कि कोई पराक्रमी राजा हमारे राज्य पर आक्रमण करनेवाला है। हमारी पराजय होगी और बिना जूतों के ही हमें जंगलों में भटकना पड़ेगा। पता नहीं, वह भील युवक हमारी सहायता कब करेगा और कब हमारा राज्य हमें वापस मिलेगा।" राजा ने दुःख-भरे स्वर में कहा।

यह सुनते ही रानी के होश-हवास उड़ गये। वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो गयी। उसने कहा, "आपको उस मुनीश्वर से पूछना था कि इस संकट से बचने का क्या उपाय है? शायद हमें पूजा-पाठ, जप-तप करने होंगे। एक बार और जाइये और उनसे जानकर आइये।"

दूसरे ही दिन राजा फिर मुनि से मिलने निकला। जंगल के रास्ते में उस समय एक बाघ एक हिरन का पीछा कर रहा था। वह हठात् रथ

के सामने आ गया। बाघ को देखते ही घोड़ा डर गया और रथ को खींचता हुआ पास ही के कीचड़ से भरे गड्ढे में टेढ़ा होकर गिर गया। राजा रथ से फिसल गया और कीचड़ में जा गिरा। रथ सारथी ने घोड़े को काबू में लाने की कोशिश की, पर उससे नहीं हो पाया। वह भी दूसरी ओर जा गिरा।

राजा के जूते कीचड़ में धंस गये थे। बिना जूतों के ही वह आगे बढ़ा। रास्ते में कांटे बिछे हुए थे। फूँक-फूँककर चलते हुए वह रथ के पास आया और रथ के सारथी से जूते लेकर पहन लिया।

ठीक उसी समय एक धनुषधारी भील युवक उधर से गुज़र रहा था। झाड़ियों के पास गिरे राजा के मुकुट को उसने देखा और उसे उठाकर अपने दुपट्टे से साफ़ किया और राजा के सिर पर रखते हुए उसने कहा, ''महाराज, आपको कहीं चोट तो नहीं आयी?''

आधे घंटे के अंदर सारथी ने रथ को राजा के सामने खड़ा कर दिया। राजा रथ में बैठ गया और कहा, ''अब हमें मुनि के यहाँ नहीं जाना है। सीधे राजभवन चलो।''

अंधेरा होते-होते राजा राजभवन पहुँचा। राजा के कीचड़ से लथपथ कपड़ों को देखकर रानी ने काँपते स्वर में पूछा, ''यह क्या हो गया? आपके कपड़ों पर यह कीचड़ कैसा?''

राजा ने जो भी हुआ, पूरा-पूरा बताया और कहा, ''निस्संदेह ही मुनि की भविष्यवाणी सच निकली। वही हुआ, जैसा उन्होंने कहा था। पर भविष्य को लेकर मैंने अनावश्यक ही कितनी ही कल्पनाएँ कीं और उस दौरान मैंने जो मानसिक यातनाएँ सहीं, वे अवर्णनीय हैं। भविष्य न मालूम होने पर ही जीवन में आनंद है, वही सुखों का मुख्य कारण है।''

रानी ने भी 'हाँ' कहा, ''इतनी अल्प वास्तविकता को जानने के लिए आपको कितनी यातनाएँ सहनी पड़ीं। मैं भी कितनी व्याकुल हो गयी।'' कहती हुई वह ठठाकर हँस पड़ी।

नौकर का सिखाया सबक

देवशास्त्री लंबे अर्से तक अध्यापक रहे। जिस दिन वे सेवा से निवृत्त हुए, उनके सम्मान में सभा हुई। उस सभा में वक्ताओं ने उनके अपार ज्ञान की भरपूर प्रशंसा की। उन्होंने अपने भाषणों में बताया कि ऐसा ज्ञान-संपन्न, प्रज्ञाशाली व्यक्ति आसपास कोई है नहीं। देवशास्त्री अपनी प्रशंसा सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुआ।

शाम को घर लौटकर, देवशास्त्री ने वह पुष्प-माला व शाल अपनी पत्नी सावित्री को दिखाते हुए कहा, ''सावित्री, निःसंदेह मैं एक प्रकांड पंडित हूँ, ज्ञानी हूँ, मेधा-संपन्न हूँ, पर दीर्घकाल से मुझे एक शंका खाये जा रही है। इतना प्रकांड पंडित होते हुए भी मेरी कक्षा में इतनी कम संख्या में पढ़ने विद्यार्थी क्यों आते हैं?''

''शायद आप उन्हें इमली के बेंत से मारते होंगे,'' सावित्री ने कहा। ''मैं तो ऐसा सोच भी नहीं सकता। मैंने कभी भी बेंत का प्रयोग नहीं किया।'' देवशास्त्री ने जोर देकर कहा।

''कहीं ऐसा तो नहीं कि आपकी इन घनी मूंछों को देखकर वे डर गये हों। आपकी इन डरावनी मूंछों को देखकर उस दिन की मुझे याद आती है, जब मैंने पहली बार विवाह के अवसर पर आपको देखा था। डर के मारे मेरी तो बुरी हालत हो गयी थी।'' सावित्री ने हँसते हुए कहा।

सेवा से निवृत्त हो जाने के बाद शास्त्री स्वग्राम लौटे, क्योंकि उन्हें लगा कि शहर में रहकर जीविका चलाना उनके लिए संभव नहीं है। उनके पास इतनी बड़ी रकम नहीं है, जिसके सहारे वे वहाँ जिन्दगी के बाकी दिन आराम से गुजार सकें। सबेरे से लेकर शाम तक घर पर ही रहकर वे पुस्तकें पढ़ते रहते थे और यों अपना समय काट रहे थे।

सावित्री ने उनकी इस दिनचर्या को देखते हुए एक दिन कह दिया, ''ज्ञान का संग्रह करते

विश्वेश्वर
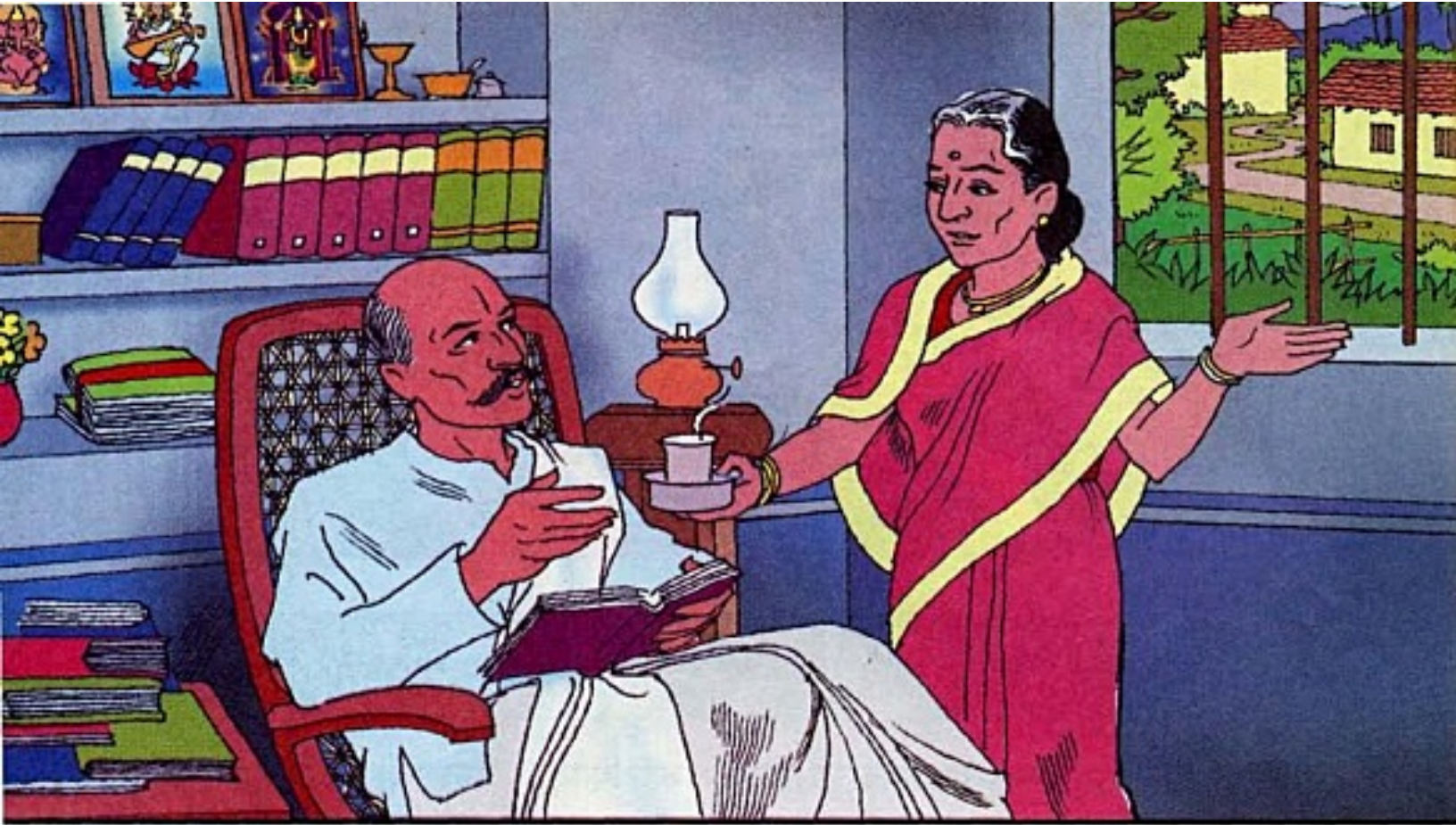
रहने से क्या लाभ? औरों में बांटने पर ही वह सार्थक होता है। कहते हैं कि ज्ञान ही एक ऐसी संपत्ति है, जिसे जितना भी बांटो, घटती ही नहीं। इस गाँव में बहुत-से अशिक्षित प्रौढ़ हैं। उन्हें शिक्षा दीजिये और कुछ उपयोगी बातें बताइये। इससे गाँव में आपकी इज्जत होगी और आप थोड़ा-बहुत पुण्य भी कमा पायेंगे।''

देवशास्त्री को पत्नी सावित्री की यह सलाह सही लगी। वे खुद अशिक्षित लोगों के घर गये और उनसे कहकर आये कि विजयदशमी के दिन से वे निःशुल्क उन्हें पढ़ायेंगे।

विजयदशमी का दिन आ ही गया। रात को भोजन कर चुकने के बाद वे किताबें लेकर पाठशाला गये। किन्तु उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वहाँ केवल एक ही आदमी बैठा हुआ है। वह गाँव के बड़े ठाकुर का नौकर रामू था।

गाँव के लोगों के इस रवैये को देखकर शास्त्री बहुत दुःखी हुए। इस उम्मीद को लेकर उन्होंने बहुत देर तक प्रतीक्षा की कि शायद और कुछ लोग आते ही होंगे। पर जब कोई भी नहीं आया तो उन्होंने रामू से कहा, ''तुम अकेले को मैं भला क्या पढ़ाऊँ ? चलता हूँ!''

पर रामू ने शास्त्री को रोका और कहा, ''गुरुजी, ज़रा मेरी बात सुन लीजिये। मैं भैंसों को चराने जब जाता हूँ तब वहाँ मात्र एक बछड़ा भी हो तो उसे खिलाये बिना नहीं लौटता। उस बछड़े को ज़रूर खिलाकर ही लौटता हूँ।''

शास्त्री उसकी बातों के अंतरार्थ को समझ गये। पढ़ाई के प्रति उसके उत्साह को देखकर वे खुश हुए। उन्होंने उसे कई विषय पढ़ाये। अनेक

विषयों पर प्रकाश ड़ाला। उसे समझाया कि मनुष्य के जीवन में शिक्षा का कितना महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने उससे अक्षर भी लिखवाये और तृप्त होकर घर लौटे।

दूसरे दिन रात को वे और बहुत-सी किताबें लेकर पाठशाला पहुँचे। यह देखकर उन्हें ताज्जुब हुआ कि वह रामू भी आज नहीं आया। वे नाराज़ हो उठे और उससे मिलने बड़े ठाकुर के घर गये। बाहर सोये रामू को उन्होंने जगाया और उससे पूछा, ''अरे अभागे, क्या एक ही दिन में पढ़ाई से तुम्हारा मन उचट गया? कल तो डींग मार रहे थे कि बछड़ा अकेला ही क्यों न हो, उसे चारा खिलाकर तंदुरुस्त रखना चाहिए। मैंने तुम्हारी बातों का विश्वास किया, उन्हें सच मान लिया और तुम्हें कल बहुत कुछ पढ़ाया। तुम तो आज उस तरफ़ फटके भी नहीं।'' नाराजगी भरे स्वर में उन्होंने कहा।

रामू ने विनयपूर्वक हाथ जोड़कर कहा, ''गुरुजी, माफ़ कीजियेगा। मैंने तो कहा था कि अकेले बछड़े को भी खिलाऊँगा, उसके मुँह में ठूसूँगा नहीं।''

शास्त्री पर इन बातों का बड़ा असर हुआ! उन्हें ये बातें चाबुक की मार की तरह लगीं। अब उनकी समझ में आया कि उनकी कक्षा में इतने कम विद्यार्थी शिक्षा पाने क्यों आते थे। पढ़ानेवाला बहुत बड़ा ज्ञानी हो सकता है, बहुत ही बुद्धिमान भी हो सकता है, काफी शिक्षित भी हो सकता है। पर उसे चाहिये कि वह शिक्षा ऐसी दे, जो विद्यार्थियों की समझ में स्पष्ट रूप से आये, सुननेवाले उसे आसानी से समझ सकें। तभी वे शिक्षा प्राप्त करने में अभिरुचि दिखायेंगे और पढ़ाई की ओर अधिकाधिक ध्यान देंगे। जिस हद तक ये समझ सकते हैं, उस हद तक ही पढ़ाना चाहिए।

उसी क्षण शास्त्री अपनी कमी जान गये। इसके बाद गाँव के कितने ही अशिक्षित वयस्कों ने उनसे समुचित शिक्षा प्राप्त की। और शास्त्री का ज्ञान भी सार्थक हुआ।
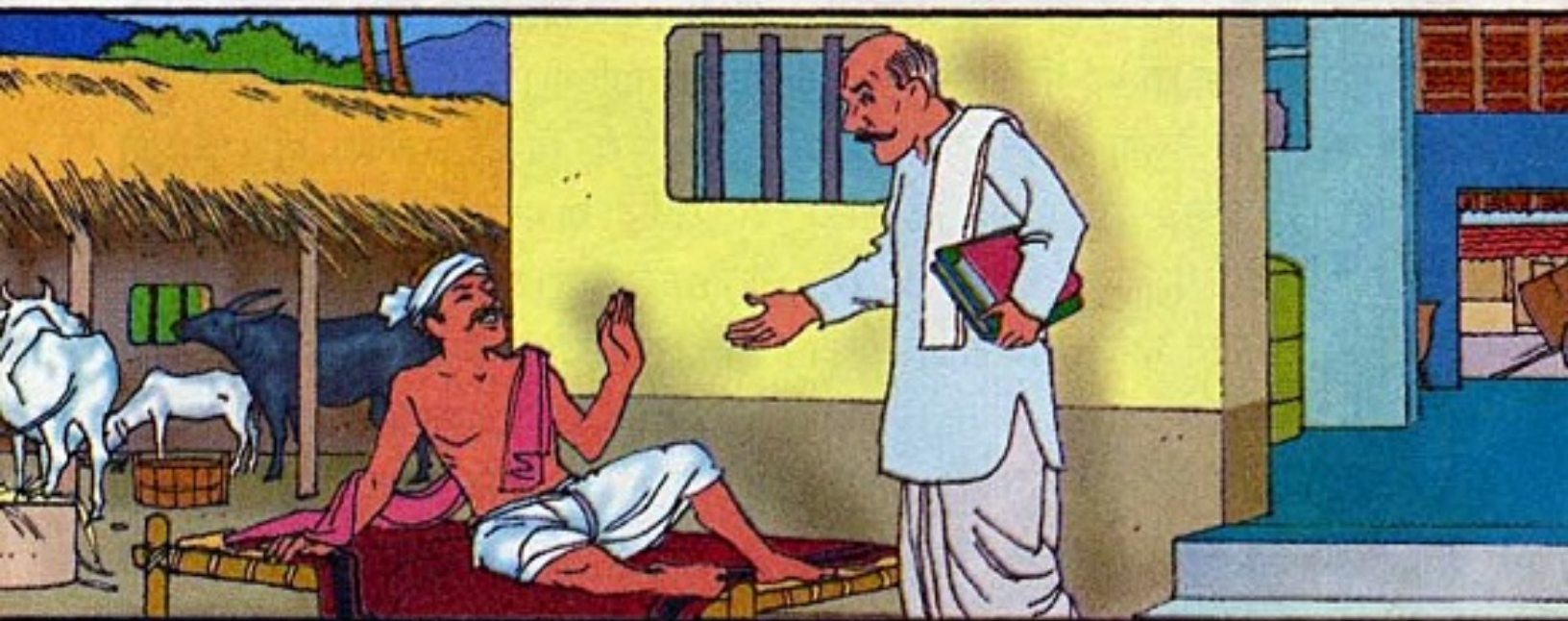
अहंकार

शिवज्ञान पंडित बावला गाँव के निवासी थे। वे उच्च कोटि के केवल पंडित ही नहीं थे, बल्कि महाज्ञानी भी थे। उनके गाँव के लोग ही नहीं बल्कि आसपास के गाँवों के लोग भी उनका बड़ा आदर करते थे। उनके घर में अक्सर पांडित्य भरी चर्चा होती रहती थी।

पार्वती उनकी इकलौती पुत्री थी। वह भी विदुषी थी। दूसरे लोग किसी विषय की सूक्ष्मता को समझें, उनके पहले ही वह समझ जाती थी। थोड़े दिनों के बाद तो वह भी घर में चल रही चर्चाओं में भाग लेने लगी। उसने अपनी विद्वत्ता व वाक्-पटुता से बड़े-बड़े पंडित व विद्वानों को भी चर्चा में हरा दिया।

शिवज्ञान पंडित कभी भी अपनी विद्वता का दंभ नहीं भरते थे। वे सदा कहा करते थे कि मेरा ज्ञान अधूरा है। अभी सीखने को बहुत कुछ बाक़ी है। किंतु पार्वती का दावा था कि उसे सब कुछ मालूम है। ऐसा कोई विषय नहीं, जिसमें वह प्रवीण नहीं। वृद्ध पंडित, ज्ञानी जब आपस में किसी गंभीर विषय को लेकर चर्चा करते रहते थे तो वह हस्तक्षेप करती थी, वाद-विवाद करती थी और साथ ही उनके संदेहों की निवृत्ति भी करती थी। उसका यह रुख दिन ब दिन ज़ोर पकड़ता गया। चर्चाओं के दौरान कभी किसी पंडित से त्रुटि हो जाती तो वह उसे सुधारती। फिर उसके अधूरे पांडित्य और अज्ञान पर ताने कसती थी, व्यंग्य बाण चलाती थी।

यद्यपि यह अहंकार उसके बचपन से ही उसमें घर कर गया था पर उसके पिता ने इसपर विशेष ध्यान नहीं दिया। उन्होंने सोचा कि उम्र के साथ-साथ उसके स्वभाव में परिवर्तन आयेगा, उसका यह अहंकार दूर हो जायेगा।

फिर भी शिवज्ञान पंडित ने उसे सावधान करते हुए दो-तीन बार बताया कि बड़ों की बातों

पच्चीस वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

के बीच में तुम्हारा इस प्रकार का हस्तक्षेप अनुचित है। हो सकता है, इससे उनके दिलों को दुख पहुँचे।

तब वह अपने पिता से कहती, ''पांडित्य या ज्ञान का उम्र से क्या संबंध है? बड़े होने का यह मतलब नहीं कि वह सब कुछ जानता है। मूर्ख हमेशा मूर्ख ही होता है।'' कभी-कभी उसे संदेह भी होता था कि शायद पिताजी यह नहीं चाहते कि लोग उसकी प्रज्ञा को जानें।

अब पार्वती सत्रह साल की हो गयी। फिर भी उसका अहंकार वैसा ही बना रहा। शिवज्ञान पंडित सर्वज्ञ थे, पर उन्हें यह मालूम नहीं हो पा रहा था कि बेटी को कैसे सुधारा जाए, उसके स्वभाव में कैसे परिवर्तन लाया जाए। वे पशोपेश में पड़ गये। साथियों के सामने भी अपने दुख को व्यक्त किया।

नवरात्रि के उत्सव के दिन थे। राजभवन में पंडितों की गोष्ठी का आयोजन हुआ था। शिवज्ञान पंडित भी वहाँ निमंत्रित थे। उनकी अनुपस्थिति में भी पंडित उनके घर में चर्चा चलाते थे। पार्वती यथावत् उनकी चर्चा में हस्तक्षेप करती रहती थी।

एक दिन पंडित आपस में एक विचित्र विषय को लेकर बातें कर रहे थे। पार्वती उनकी बातों को ध्यान से सुन रही थी। वे आपस में कह रहे थे कि पुराने तालाब के किनारे पर स्थित मंडप में किसी ने कुछ लिखा है। पर किसी से भी वह पढ़ा नहीं जा रहा है और सब के सब मुँह लटकाये वापस लौट रहे हैं। यह सुनते ही पार्वती ने कहा, ''मैं उसे पढ़ूँगी। चाहे वह कितना भी कठिन क्यों न हो। किसी का लिखा हुआ अगर मैं पढ़ नहीं
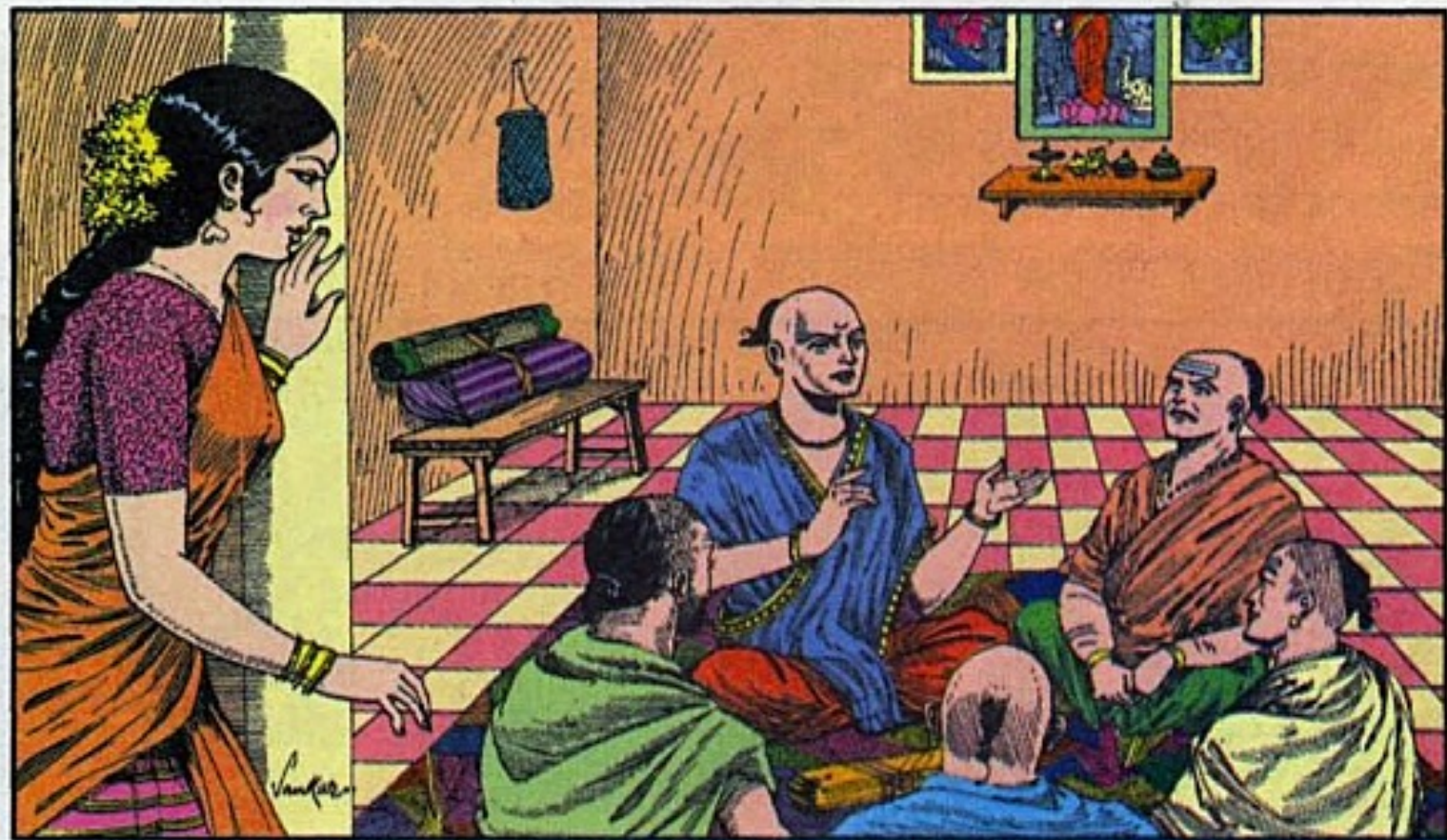
पाऊँगी तो मुझे शिवज्ञान पंडित की पुत्री कहलाने का कोई अधिकार नहीं।'' उसके स्वर में दर्प भरा हुआ था।

गाँव भर में यह बात फैल गयी कि मंडप में लिखे गये विषय को पार्वती पढ़ने जा रही है। गाँव के सभी लोग मंडप के पास पहुँच गये। पार्वती आयी और दीवार पर लगे परदे को हटाकर यों पढ़ने लगी।

''जो कर सकते हैं वे ही इसे खुल्लमखुल्ला पढ़ें। इस तालाब में दस फुट तक का कीचड़ भरा हुआ है। मैं अभी कुदाल व टोकरी ले जाऊँगा/जाऊँगी और सीधे वहाँ जाकर अकेले ही सारा कीचड़ निकाल दूँगा/दूँगी। आप सब इसके गवाह हैं।''

जैसे ही उसने पढ़ना पूरा किया, किसी ने उसके सामने कुदाल व टोकरी लाकर रख दी।

चकित होकर उसने पूछा, ''यह क्या?'' वहाँ उपस्थित लोगों ने कहा, ''कीचड़ निकालो।''

''मैंने तो सिर्फ़ कहा था कि पढ़ूँगी। यह तो नहीं कहा कि करूँगी।'' उसने कहा।

''हम सब क्या इतने अनपढ़ और मूर्ख हैं कि इसे पढ़ ही नहीं सकते। उसमें साफ़-साफ़ लिखा हुआ है कि इसे पढ़कर जो सुनाते हैं, उन्हें वह काम करना होगा, जैसा कि उसमें लिखा हुआ है। इसी वजह से हमने अपने मन में पढ़ लिया। खुल्लमखुल्ला पढ़कर सुनाने की हमने बेवकूफ़ी नहीं की। तुमने तो बिना सोचे-विचारे पढ़कर सुना दिया। कुदाल और टोकरी लो और काम शुरू कर दो। अपने वादे से तुम मुकर नहीं सकती।'' गाँव के बड़ों ने कहा।

पार्वती रो पड़ी। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। बड़ों ने उसे ढाढ़स बंधाते हुए कहा, ''जब चाहो तब ज़्यादा अक़्लमंदी दिखानी नहीं चाहिए। सही समय पर ही, आवश्यकता पड़ने पर ही उसे उपयोग में लाना चाहिए।''

शिवज्ञान पंडित के लौटते-लौटते पार्वती में पूरा परिवर्तन हो गया। उसके अहंकार को कुचल डालने के लिए अपने मित्रों के किये गये प्रयत्नों के बारे में जानकारी पाकर वे खुश हुए। इस बात पर भी उन्हें बड़ी खुशी हुई कि उनकी बेटी पार्वती के स्वभाव में परिवर्तन आ गया।

नरेन्द्रदेव को देववाणी से गरुड़ का नाम सुनकर आश्चर्य होता है ।

क्या गरुड़ कोई प्रेतात्मा है?

हो सकता है । शक्तिशाली भी लगता है । मेरे गुरु तांत्रिक को अधिक मालूम होगा ।

ये अशर्फियाँ ले जाओ और तांत्रिक को यहाँ ले आओ ।

वह वृद्ध है और बहुत दूर एक गुफा में वह अपनी विद्या का अभ्यास करता है ।

वह सर्पों के साथ अकेला रहता है । वह अपने को नागबन्धु कहता है । वह श्रावण महीने में पहाड़ी के नीचे मंदिर में अपने शिष्यों से मिलता है।

जब नरेन्द्रदेव पहाड़ों पर चला जाता है, तब महल में...
यह आवाज कैसी है? आह! पिता का चित्र हिल रहा है।
आदित्य चित्र के पीछे से सन्दूक निकालता है।

पंख तैरने लगता है। आदित्य धीरे-धीरे गरुड का रूप ले लेता है।

रवीन्द्रदेव महल के रक्षकों के साथ आदित्य के निवास पर जाता है।
इस बार वह पकड़ा जायेगा।

शयनागार का द्वार अचानक खुल जाता है। घुसपैठियों को कठोर प्रहार मिलता है। वे भागते हैं।
लेकिन यह विचित्र प्रकाश क्या है? कुछ दिखाई नहीं देता।

महोदय, हम लोगों को खरोचें लगीं जैसे गरुड की हों।

बकवास बन्द करो !

खुशबू ! यह खुशबू कहाँ से आती है?

आदित्य! तुम यहाँ?

क्रमशः

साथ-साथ

लक्ष्मी सत्तर साल की बुढ़िया थी। उसे समाचार मिला कि पड़ोस के गाँव में रहनेवाले उसके पोते की तबीयत ठीक नहीं है। दोपहर का समय था। कड़ी धूप थी। फिर भी इसकी परवाह न करते हुए वह पोते को देखने निकल पड़ी। थोड़ी दूरी पर एक हाट लगी हुई थी। गाय, बैल व भैंस उस हाट में खरीदे और बेचे जा रहे थे। जहाँ देखो, लोगों की भीड़ थी। आदमियों और पशुओं से भिड़ जाने का भी डर लगा रहता था। दो क़दम आगे बढ़ाना भी लक्ष्मी से हो नहीं पा रहा था। उसे भय था कि कोई उससे टकरा न जाए और वह कहीं गिर न पड़े, चोट न लग जाए।

इतने में पचीस साल का एक युवक लोगों के बीच में से उसके पास आया। लक्ष्मी ने उससे कहा, ''मुझे इस हाट से निकलना है और उस गाँव में जल्दी पहुँचना है, जहाँ मेरी बेटी रहती है।''

''तो क्या मैं आपका साथ दूँ?'' युवक ने पूछा।

''इस हालत में मुझे और क्या चाहिए? अपना हाथ दो। उसे पकड़कर तेरे साथ-साथ चलूँगी।'' लक्ष्मी ने कहा।

वह किसी की परवाह किये बिना निधड़क हाट के बीच में से होते हुए आगे बढ़ने लगा। पशुओं को हाँकते हुए जानेवाले, छोटी-छोटी दुकानवाले उसे देखकर चकित रह गये और कहने लगे, ''अरे, अंधाधुंध कहाँ चल पड़े? गाड़ी के पहिये के नीचे या पशुओं के पैरों के नीचे गिरकर मर जाने का ठान लिया है क्या? अपने साथ-साथ इस बुढ़िया को भी मार डालना चाहते हो?'' वे उसे गालियाँ भी देने लगे।

उसने न ही उनकी परवाह की, न ही उनकी बातों की। देखते-देखते वह हाट के बाहर आ गया। तब तक मौन हो उसके साथ-साथ चली आयी लक्ष्मी ने उससे पूछा, ''यह क्या? अंधे की तरह यह चाल कैसी? तुम्हारे साथ आते हुए मुझे लगता था कि मैं किसी भी क्षण किसी के पैरों तले कुचलकर मर जाऊँगी। बचकर बाहर आने की मुझे उम्मीद नहीं थी। तुम्हारे साथ आकर अनावश्यक मैंने आफ़त मोल ली।''

''माँजी, मैं अंधा हूँ, इसीलिए तो मैं तुम्हारे साथ आना चाहता था।'' उस अंधे युवक ने कहा।

श्याम राठौड़

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

दिसम्बर अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

शिव भगत राम
हरिजन विद्यालय, सदर बाजार,
बैरकपुर, उत्तर २४ परगना - ७४३ १०१,
पश्चिम बंगाल.

विजयी प्रविष्टी

दीदी चली ससुराल।
बहना रहो खुशहाल ॥

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : Viswam

CHANDAMAMA (Hindi) FEBRUARY 2002
Regd. with RNI No. 1087/57
Registered No. TN/Chief PMG-866/2001